अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

श्री सिद्धक्षेत्र तारंगाजी (गुजरात)

वीर निर्वाण संवत् - 2541
आषाढ़ शुक्ल पक्ष, वि.सं. 2072, जून 2015

वर्ष : आठ

अंक : बत्तीस

मूल्य : 10/-

तारंगाजी में आषाढ़ माह की आष्टाह्निक पर्व पर
सम्पन्न होने जा रहे सिद्धचक्र विधान की मण्डल रचना।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान में भाग लेने वाले प्रमुख
पात्रगण आचार्यश्री का आशीर्वाद लेते हुए।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान में इन्द्राणियाँ
भक्ति करते हुए।

वर्षायोग 2015 की स्थापना, ऐलक क्षुल्लक दीक्षा के पूर्व
सांस्कृति कार्यक्रम देती अहुरा नगर, सूरत की महिलाएँ।

दीक्षा के कार्यक्रम के पूर्व सिद्धक्षेत्र तारंगाजी में
सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देतीं हुई जैन महिलाएँ।

दीक्षार्थियों की गोद भराई के कार्यक्रम में भाग लेते
हुए भक्तगण।

दीक्षार्थियों की गोद भराई का कार्यक्रम देखते हुए
क्षेत्र के प्रमुख व उप प्रमुख।

कार्यक्रम हेतु पाण्डाल में पधारते हुए आचार्यश्री
आर्जवसागरजी महाराज को नमन् करते भक्तगण।

आशीर्वाद व प्रेरणा

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-आठ
अंक - बत्तीस

● *परामर्शदाता* ●

डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179

पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●

श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन, एल.आई.जी.-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-462003 (म.प्र.) फोन : 4221458

● *प्रबंध सम्पादक* ●

डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●

डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●

पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●

श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन

फोन : 0755-2673820, 9425601161

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. सत्पथ-दर्पण — 02
   – पं. अजित कुमार शास्त्री
2. सिद्धवरकूट वंदन — 08
   – आचार्यश्री आर्जवसागरजी
3. गणितसार संग्रह — 11
   – अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन
4. पारसचन्द से बने आर्जवसागर — 18
   – सहसम्पादकीय
5. मानव-संस्कृति के आदि-पुरस्कर्ता भगवान ऋषभनाथ — 23
   – डॉ. नेमीचंद जैन
6. परिचयः ऐलकश्री महानसागरजी महाराज — 26
7. संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 48 वाँ दीक्षा दिवस समारोह — 27
   – संजय जैन, देवरी समाचार
8. परिचय : क्षुल्लकश्री भाग्यसागरजी महाराज — 28
9. परिशुद्ध वस्तु चा मोठा उपकार (मराठी भाषा में) — 29
   – मुनिश्री आर्जवसागरजी
10. गुजरात शान छे महान छे (गुजराती भाषा में) — 30
   – मुनिश्री आर्जवसागरजी
11. धर्मद कडेगे बन्नि (कन्नड़ भाषा में) — 31
   – मुनिश्री आर्जवसागरजी
12. अहिंसात्मक तरीके से मनायें दीपावली — 32
13. सूतक-पातक समाधान (चार्ट) — 33
14. सूतक-पातक में पीढ़ियाँ ऐसे गिने — 34
15. मंगल समाचार — 35
16. प्रश्नोत्तरी

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः।

सत्पथ-दर्पण

गतांक से आगे.....

पं. अजित कुमार शास्त्री

सम्यग्दर्शन हो जाने पर सबसे बड़ा पाप मिथ्याश्रद्धान या मिथ्यात्व मैल आत्मा से दूर हो जाता है। उस मिथ्यात्व द्वार से प्रवेश करने वाला कर्म-मल का आना बन्द हो जाता है। अतएवं मिथ्यात्व, नरक आयु आदि 41 प्रकृतियों का संवर (आस्रव-निरोध) हो जाता है, किन्तु प्रशस्त राग के कारण मोक्ष के साधन भूत पुण्य का बन्ध भी होता है। इस तरह आत्मा मुक्तिमार्ग पर चल पड़ता है।

जब वह जीव अणुव्रती चारित्र ग्रहण करता है तो मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, नरकायु आदि पूर्वोक्त 41 कर्मों (प्रकृतियों) के सिवाय अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माय लोभ, मनुष्य आयु आदि दश कर्म प्रकृतियों का और (यानी 51 प्रकृतियों का) संवर हो जाता है (51 प्रकृतियों का आस्रव, बन्ध नहीं होता)।

पहले से भी असंख्यात गुणी निर्जरा प्रतिसमय होती है, प्रशस्त रागभाव से पहले की अपेक्षा वहां कर्म बंध भी होता है। यह पाँचवां गुणस्थान होता है।

इससे भी ऊपर जब मुनि-दीक्षा लेकर महाव्रती चारित्र आचरण किया जाता है तब पूर्वोक्त 51 कर्म प्रकृतियों के सिवाय प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ इन कर्म प्रकृतियों का (यानी 55 प्रकृतियों का) संवर हो जाता है और पाँचवें गुणस्थान से भी असंख्यात गुणी कर्म निर्जरा होने लगती है। यह छठे गुणस्थान की वार्ता है।

मुनि जब धर्मध्यान में निमग्न सातवें गुणस्थान में होते हैं तब उनके पूर्वोक्त 55 कर्म प्रकृतियों के सिवाय आसाता वेदनीय आदि छह कर्म प्रकृतियों का और (61 प्रकृतियों का) संवर होता है, यानी 61 प्रकृतियों का आस्रवबन्ध नहीं होता। तथा छठे गुणस्थान से भी असंख्यातगुणी कर्म-निर्जरा प्रतिसमय होने लगतीहै। इस तरह शुक्लध्यान से पहले शुभोपयोग से कर्मसंवर, निर्जरा होती है।

इससे आगे आठवां गुणस्थान होता है तब सातवें से भी अधिक कर्मों का संवर और निर्जरा होती है।

इसी तरह नौवें और दशवें गुणस्थान में शुक्लध्यानावस्था में क्रम से उत्तरोत्तर अधिक कर्म-संवर, कर्म-निर्जरा होती है।

मोहनीय कर्म का उदय दशवें गुणस्थान तक रहता है, अतः पुण्य-भाव भी दशवें गुणस्थान तक होता है। यहीं तक सराग चारित्र होता है। छठे गुण-स्थान तक व्यक्त राग-भाव होता है अतः उसको प्रमत्त विरत गुणस्थान कहा जाता है। फिर सातवें गुणस्थान से दशवें गुणस्थान तक अव्यक्त राग-भाव रहता है। अतएव दशवें गुणस्थान तक का सम्यक्त्व 'सराग सम्यक्त्व' होता है, इससे ऊपर मोहनीय कर्म

का उदय न रहने से वीतराग सम्यक्त्व तथा वीतराग चारित्र प्रसिद्ध नाम यथाख्यात चारित्र रहता है।

इस तरह दशवें गुणस्थान तक भाव पुण्यकर्म का उदय रहता है। इससे ऊपर 11वें, 12वें, 13 वें गुणस्थान में पुण्यकर्म का (मनुष्य आयु, औदारिक शरीर, वज्रवृषभनाराच संहनन, साता वेदनीय आदि का) उदय रहता है तथा पुण्यकर्म (एक समय स्थिति वाले साता वेदनीय) का बन्ध भी होता है।

चौदहवें गुणस्थान के उपान्त्य समय तक मनुष्य आयु आदि पुण्य कर्मों का उदय रहता है, परन्तु पुण्य कर्म का आस्रव या बन्ध नहीं होता।

यह पुण्य भाव, पुण्य द्रव्य कर्मफल का संक्षेप से विवरण है।

भाव संग्रह में लिखा है कि –

लद्धं जह चरम तणु चिरकय पुण्णेण सिज्झए णियमा।
पाविय केवल णाणं जह खाइय संजमं सुद्धं ॥423॥

तम्हा सम्मादिट्ठी पुण्णं मोक्खस्स कारणं हवई।
इय णाऊण गिहत्थो पुण्णं चायरउ जत्तेण ॥424॥

अर्थ–यदि यह जीव अपने चिरकाल के संचित किये हुए पुण्य कर्म के उदय से चरम शरीरी हुआ तो वह जीव यथाख्यात नामक शुद्ध चारित्र को धारण करके तथा केवलज्ञान को पाकर नियम से सिद्ध अवस्था प्राप्त कर लेता है। अतः सम्यग्दृष्टि का पुण्य मोक्ष का कारण होता है। यह समझकर गृहस्थ को यत्नपूर्वक पुण्य का उपार्जन करते रहना चाहिये।

उपसंहार

सम्यग्दृष्टि प्राणी का पुण्यभाव साक्षात् (10 वें गुणस्थान की अपेक्षा) शुद्ध उपयोग का उपादान कारण है। तथा शुक्लध्यान का भी साक्षात् उपादान कारण है। यह पुण्यभाव सम्यग्दृष्टि जीव के चौथे से दशवें गुणस्थान तक अनेक प्रकृतियों का उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ संवर करता जाता है, गुणस्थान–क्रम से तथा भाव–क्रम से प्रतिसमय पूर्व भूमिका की अपेक्षा असंख्यात गुणी निर्जरा भी करता जाता है। एवं उसके साथ ही कषायभाव के संसर्ग से पहले से घटता हुआ कर्म–बन्ध भी करता जाता है।

अतएव पुण्यभाव मोक्ष का कारण है, इसी कारण प्रत्येक सम्यग्दृष्टि जीव को वह आत्म कल्याण का साधक है। अतः वह अपनी–अपनी भूमिका के अनुसार पुण्य भाव प्रत्येक सम्यग्दृष्टि को उपादेय है।

सीढ़ियों पर चढ़ते समय पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी आदि नीचे–नीचे की सीढ़ियाँ स्वयं छूटती चली जाती हैं, इसी प्रकार से पुण्यभाव में उत्तरोत्तर बढ़ते हुए भावों की श्रेणी में क्रम से अविरति, अणुव्रत (संयतासंयत) भाव छूटते जाते हैं। आत्मध्यान की दशा में मुनि के आहार, विहार, उपदेश, शास्त्र–निर्माण आदि बाह्य क्रिया न रहने से प्रवृत्ति रूप महाव्रत तथा समिति उतने समय के लिए नहीं होती। आठवें गुणस्थान में

उपशम श्रेणी चढ़ने वाले मुनि को अन्तर्मुहूर्त्त पीछे प्रवृत्ति रूप महाव्रत, समिति आदि का पुनः आचरण करना पड़ता है। क्षपकश्रेणी के शुक्लध्यानी मुनि का प्रवृत्ति रूप चारित्र सदा के लिए छूट जाता है, परन्तु संयम (सामायिक, छेदोपस्थापना नौवें गुणस्थान तक और सूक्ष्म साम्पराय) दशवें गुणस्थान तक रहता है। तदनन्तर वीतराग संयम (यथाख्यात चारित्र) हो जाता है। जो कि सदा (अनन्त काल तक) बना रहता है, क्षायिक भाव होने के कारण वह कभी नष्ट नहीं होता।

पुण्यकर्म का बंध 13 वें गुणस्थान तक केवली के भी होता है और पुण्यकर्म का उदय सभी गुणस्थानों (14 वें गुणस्थान में भी) में होता है। अन्त में नष्ट होता है।

पुण्य का उदय न हो तो

यदि पुण्यकर्म का उदय न हो तो विवेकशील और धर्माचरण, धर्मध्यान, शुक्लध्यान करने में समर्थ मनुष्यभव, स्वस्थ शरीर, वज्रवृषभनाराच संहनन, जैनधर्म का समागम, भगवान के दर्शन करने योग्य नेत्र, जिनवाणी सुनने योग्य कान, मन्दिर तथा तीर्थयात्रा करने योग्य पैर, शुभ करने योग्य हाथ, धर्म प्रवचन करने योग्य रसना (जीभ) कहाँ से मिलती?

पुण्य कर्म का उदय न हो तो नीचगोत्र, दीन, भिखरी, दरिद्री, रोगी, घृणित, पतित, अपमानित परिस्थिति, म्लेच्छ खंड मिले। उस दशा में मनुष्य होकर भी धर्म साधन की सुविधा न मिले, समस्त जीवन भीख माँगने में, आर्त्त, रौद्र परिणामों में ही व्यतीत होवे।

भोग-उपभोग

सदाचार की उपेक्षा करके, धर्मभावना का परित्याग करके जो मद्यपान, मांसभक्षण, वेश्या-सेवन, परस्त्री-गमन आदि कुकृत्य किये जाते हैं, वह पुण्यकार्य नहीं है, वह तो नरक में ले जाने वाला पाप कार्य है। उसको पुण्यकार्य किसी ने नहीं माना।

वज्रनाभि चक्रवर्ती के समान -

बीज राखि फल भोगवै, ज्यों किसान जगमांहि।
त्यों चक्री नृप सुख करै, धर्म विसारे नाहिं।।

के अनुसार पुण्यकर्म का भोग उपभोग आत्मा का अभ्युदय करने वाला है, आत्मा का पतन करने वाला नहीं है।

पुण्याचरण न हो तो

श्रावकों के लिए आचरण करने योग्य दो ही भाव हैं - 1. शुभ और 2. अशुभ। यानी पुण्य और पाप। इन दोनों में से यदि पुण्य आचरण को विष्ठा-समान समझकर त्याग दिया जावे तो शेष पापाचरण ही रहेगा। तो

क्या पाप का आचरण किया जावे?

यह एक मुख्य प्रश्न पुण्य को विष्ठा मानने, कहने, लिखने वालों के सामने हैं।

शास्त्रीय प्रमाण

श्री पूज्यपाद आचार्य ने ''पुण्य'' शब्द का अर्थ निम्न प्रकार बतलाया है -

''पुनात्यात्मानं पूयतेऽनेनेति वा पुण्यम्। तत्सद्वेद्यादि।''

अर्थ - जो आत्मा को पवित्र करता है या जिससे आत्मा पवित्र होता है वह पुण्य है, जैसे साता वेदनीयादि।

पुण्ण पूदपवित्ता पसत्थसिवभद्द खेमकल्याणा।

सुहसोक्खादो सव्वे णिद्दिट्ठा मंगलस्स पज्जामा ॥1-8॥ (ति.प.)

अर्थ-पुण्य, पूत, पवित्र, प्रशस्त, शिव, भद्र, क्षेम, कल्याण, शुभ, सौख्य और मंगल ये सब समानार्थक शब्द कहे गये हैं।

श्री कुन्दकुन्द आचार्य ने भी शुभ रूप पुण्य से मोक्ष की प्राप्ति होना बतलाई है।

जिणचरचरणांबुरुह णमंति जे परमभत्तिराएण।

ते जम्मवेल्लिमूलं खणंति वरभावसत्थेण ॥153॥ (भाव पाहुड)

अर्थ-जे पुरुष परम भक्ति अनुराग करके जिनवर के चरण कमलों को नमते हैं वे श्रेष्ठ भाव रूप शास्त्र द्वारा संसार की जड़ को छेदते हैं।

श्री 108 कुन्दकुन्द आचार्य ने भाव पाहुड़ की गाथा 76 में '**सुह धम्मं जिणवरिंदेहिं**' धर्म ध्यान को शुभ भाव बतलाया है।

श्री 108 वीरसेन आचार्य ने धवल पु. 13 पृ. 82 परलिखा है -

'मोहणीयविणासो पुण धम्म-ज्झाणफलं।'

यानी-मोहनीय कर्म का विनाश धर्मध्यान का फल है।

श्री 108 उमास्वामी आचार्य ने भी '**परे मोक्षहेतू**' सूत्र द्वारा धर्म ध्यान को मोक्ष का कारण कहा है।

श्री 108 वीरसेन आचार्य ने जयधवल पु. 1 पृ. 6 पर पुण्य रूप शुभ परिणाम से संवर निर्जरा होना बतलाया है।

'सुह-सुद्धपरिणामेहिं कम्मक्खयाभावे तक्खयाणुववत्तीदो।'

अर्थ - यदि शुभ या शुद्ध परिणामों से कर्मों का क्षय न माना जाय तो फिर कर्मों का क्षय हो ही नहीं सकता।

'मोक्षस्यापि परमपुण्यातिशयचारित्र-विशेषात्मकपौरुषाभ्यामेव संभवात्।'

अर्थ-मोक्ष की प्राप्ति परम पुण्य और चारित्र रूप पुरुषार्थ के द्वारा ही संभव है।

अर्थात् मात्र चारित्र रूप पुरुषार्थ से मोक्ष प्राप्त नहीं होता किन्तु मनुष्य गति, उत्तम संहनन उच्चगोत्र आदि विशिष्ट पुण्य कर्म की सहकारिता की भी उसमें आवश्यकता है।

श्री जिनसेन आचार्य ने महापुराण सर्ग 30 श्लोक 128 में लिखा है-

''पुण्यातीर्थंकरश्रियं च परमां नैःश्रेयसीं चाश्नुते।''

इन शब्दों द्वारा यह बतलाया है कि पुण्य से तीर्थंकर की लक्ष्मी प्राप्त होती है और परम कल्याण रूप मोक्ष लक्ष्मी पुण्य से मिलती है।

श्री पद्मनन्दि आचार्य ने प. पर्व 6 श्लोक 58 में लिखा है कि-

''कुर्वते तत् परमं पुण्यं हेतुर्यत् स्वर्गमोक्षयोः।''

यानी- भव्य जीव उस पुण्य को करते हैं जो स्वर्ग और मोक्ष का कारण है।

पंचास्तिकाय (श्री महावीर जी से प्रकाशित) गाथा 85 की टीका में पृष्ठ 235 पर श्री जयसेन आचार्य लिखते हैं-

यथा रागादिदोवरहितः शुद्धात्मानुभूतिसहितो निश्चयधर्मो यद्यपि सिद्धगतेरुपादानकारणं भव्यानां भवति, तथा निदान-रहितपरिणामोपार्जिततीर्थंकर-प्रकृत्युत्तमसहननादि-विशिष्टपुण्य-धर्मोपि सहकारिकारणं भवति।

अर्थ- जैसे राग आदि दोष रहित, शुद्ध आत्मा की अनुभूति-सहित निश्चय धर्म यद्यपि भव्यों की सिद्धगति का उपादान कारण होता है, तथा निदान-रहित परिणामों से उपार्जित तीर्थंकर प्रकृति, उत्तम संहनन आदि से विशिष्ट पुण्य रूप धर्म भी सिद्धगति का सहकारी (निमित्त) कारण होता है।

श्री पं. वंशीधर जी को पुण्य का मर्म, सिद्धान्त ग्रन्थों से कर्मों का आस्रव, बन्ध, उदय, सत्ता तथा संवर, निर्जरा एवं गुणस्थानानुसार शुभ, शुद्ध भावों का अध्ययन करके, अवगत करना चाहिये।

वैसे तो पुण्य सदा उपादेय रहा है, किन्तु इस युग में जब कि श्रावकों के लिए शुद्ध उपयोग असंभव है, तब तो पुण्य और भी अधिक ग्राह्य है। स्मरण रहे कि सराग-सम्यक्त्व और सराग-संयम भी पुण्य रूप है, शुभ भाव है।

ट्रैक्ट का नोट

सोनगढ़ के ट्रैक्ट के पृष्ठ 18 पर नोट देकर यह अभिप्राय व्यक्त किया है कि-

''कहान भाई ने समयसार प्रवचन में पुण्य भाव-शुभ भाव को विष्ठा नहीं कहा किन्तु पुण्य के उदय से प्राप्त नोकर्म पुद्गल द्रव्य, भोग ''उपभोग रूप सामग्री को विष्ठा कहा है।''

इस विषय में हमारा यह कहना है कि कहान भाई के प्रवचन में ऐसा कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है, जिससे लेखक के उक्त नोट का समर्थन होता हो, यह अधिकृत धोषणा तो कहान भाई की ओर से होनी चाहिए।

दूसरे– यदि उन्होंने पुण्य कर्म–उदय से प्राप्त नोकर्म पुद्‌गल और भोग उपभोग सामग्री को ही विष्ठा की उपमा देकर त्याज्य बतलाया है तो वह सामग्री तो अन्य साधारण व्यक्तियों के समान उनको भी प्राप्त हुई है, फिर कम से कम उनको तो उस सामग्री का परित्याग कर देना चाहिए जिससे कथनी और करनी में एक–रसता आवे। क्या वे पुण्य के उदय से प्राप्त अपने सुन्दर मानव शरीर का, उच्च कुल का, यशःकीर्ति का, अपनी भोग उपभोग–सामग्री का त्याग कर सकते हैं? (नहीं कर सकते।) अतः लेखक का यह नोट भी निःसार है।

लेखक ने जो पुण्य के हीन–उपमा वाले विशेषणों के उल्लेख अन्य ग्रन्थों में बतलाये हैं उसमें से एक भी उल्लेख इससे मेल नहीं खाता कि–

'ज्ञानियों के द्वारा छोड़ी गई पुण्यरूपी विष्ठा जगत में अज्ञानी जीव खाते हैं।''

अतः उन अधारों से इस अनुचित गलत उल्लेख का समर्थन नहीं होता।

अर्हन्त भगवान का समवशरण, आठ प्रतिहार्य, 34 अतिशय भी विभूति है, परम औदारिक शरीर, बज्रऋषभ नाराच संहनन, उच्चकुल, यशःकीर्ति भी पुण्य विभूति है, क्या यह सब विष्ठा के समान है? जिन–वाणी, महान आध्यात्मिक ग्रन्थ, सुन्दर मन्दिर, प्रतिमायें भी पुण्य प्राप्ति की सामग्री हैं, क्या इन्हें भी ऐसी हीन–उपमा दी जा सकती है?

निर्ग्रन्थ मुनिचर्या, व्रतिक श्रावक चर्या, मुनियों को आहारदान, मंदिर निर्माण, ग्रन्थ–प्रकाशन, पारमार्थिक संस्थाएँ, तीर्थक्षेत्र आदि सभी पुण्य–सामग्री रूप हैं, क्या इन्हें यह हीन–उपमा दी जा सकती है?

क्रमशः............

श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्र में चातुर्मास

श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्र में प.पू. आचार्यश्री आजर्वसागरजी महाराज का ससंघ चातुर्मास हो रहा है। पुण्य लाभ लें।

पता– श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र कोठी तारंगा, तहसील सतलासणा

जिला– महेसाणा गुजरात फोन 02761–295073/ 295273

सम्पर्क सूत्र– महामंत्री हसमुख भाई–09375610566

मंत्री स्नेहिल भाई –09824057899

सिद्धवरकूट वंदन

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

(1)

धन्य सिद्धवर कूट जगत में, अतिशयकारी करें नमन।
दो चक्री दस कामदेव जँह, गये मोक्ष, सुख किया वरण॥
शंभव जिनवर ने इस भू-पर, केवलज्ञान जगाया था।
देवेन्द्रों ने आकर सुन्दर, समवसरण रचवाया था॥

(2)

रेवा तट है पावन भूमि, मुनियों ने शुभ ध्यान किया।
आध्यात्मिक सुख के सागर में, डूब निजामृत पान किया॥
आज भविकजन उसी भूमि पर, आत्मिक सुख शांति पाते।
नमते पद उन मुनीवरों के, भूल जगत, जिन गुण गाते॥

(3)

रेवा तट की कल-कल धारा, मन को मोहित करती है।
चलें अनवरत पुरुषार्थी बन, जन-जन से यह कहती है॥
कावेरी का संगम रेवा-नदी से मानो कहता हो।
निश्चय नय व्यवहार साथ जब, शिव मग में फिर थिरता हो॥

(4)

रेवा नदी की शीतल धारा, मानो जन-जन से कहती।
ध्यान करो तुम मुनियों जैसा, सदा शान्ति जग में रहती॥
राजमहल को छोड़ यहाँ पर, दो-चक्री जब आये थे।
प्रकृति सौम्य एकान्तथान पा, अतीव ही हर्षाये थे॥

(5)

पुष्पदन्त के तीर्थकाल से, मदन यहाँ पर आये थे।
राज-पाट तज दीक्षा लेकर, बने श्रमण जग भाये थे॥
मघवा व सनतकुमार नृप-चक्री ने वैभव छोड़ा।
मुनि बन करके ध्यान लगाया, कर्मों का बंधन तोड़ा॥

(6)

सनतकुमार वत्सराज व, कनकप्रभू फिर मेघ प्रभो।
विजय राज, श्रीचंद मदन फिर, नलराज, बलीराज कहो॥
वसूदेव जु कामदेव अरु, जीवन्धर अन्तिम जानो।
सभी साधु बन इसी धरा से, गये मोक्ष शुभमय मानो॥

(7)

करोड़ साढ़े तीन मुनीश्वर, इसी धरा से मुक्त हुए।
पूज्य हुए वे तीन लोक से, अनन्त गुण से युक्त हुए॥
यहाँ जिनालय चरणांकित कर, देवों ने बनवाये थे।
ध्वजाएँ फहरीं जयकारों सह, सिद्धकूट गुण गाये थे॥

(8)

मूल जिनालय शंभवजिन का, त्रयवेदी में जिन शोभें।
आजू-बाजू महावीर जिन, भव्य-गणों के मन मोहें॥
ऊपर आदिनाथ बैठे हैं, शिखर ध्वजा लहराती हैं।
मंदिर सम्मुख देखें सबजन, मानस्तम्भ छवि भाती है॥

(9)

पार्श्वनाथ का जिन मंदिर भी, वीतरागमय शोभ रहा।
अजित व शीतलनाथ प्रभो सह, सबके मन को मोह रहा॥
सर्व बीच में दो चक्री दस-कामदेव का जिनआलय।
ऊँचा शोभे शिखर मयी यह, कहता पालो सिद्धालय॥

(10)

शंभव जिन व चन्दाप्रभु सह-बाहुबली की छवि न्यारी।
पार्श्वनाथ भी पास विराजे, गंधकुटी लगती प्यारी॥
इनके शिखरों की शोभा सह-चरण चिन्ह भी अंकित हैं।
भवि-जन नमते विनय भावसह-बढ़ते सदा निशंकित हैं॥

(11)

शान्तिनाथ का भव्य जिनालय, जिनमहिमा विखराता है।
दो वेदी भी रहीं पास में, सबका मन हर्षाता है॥

नेमिनाथ का प्रथम जिनालय, सर्व प्रथम दर्शन दाता।
करें भाव से भाविक दर्शन, मिलती सबको सुख साता॥

(12)

वीर प्रभो की स्मृति कारण, धर्म चक्र की शोभा है।
आश्रम, त्यागी निलय व अतिथि-निवास ने मन मोहा है॥
विनत खड़े हैं इन्द्र देवता, सेवक बनकर प्रभो शरण।
रहे व्यवस्थित सभी थान हैं, उपवन में हैं साधुचरण॥

(13)

इसी सिद्धवरकूट से भाविक, मुनियों को जो ध्यावेंगे।
जिनवर पूजा, प्रवचन से जो, मन को शुद्ध बनावेंगे॥
मण्डल पूजा, श्रीजी शोभा, से जो पुण्य कमायेंगे।
'आर्जवसागर' सूरि हि बनकर, मोक्ष सुखी हो जावेंगे॥

(14)

नमूँ सिद्धवरकूट शुभ, जिन गुणगण की खान।
ध्यान करो नित सुख मिले, मिले हि फिर निर्वाण॥

(15)

फाल्गुन अठाई अंत में, मेला उत्सव जान।
श्रीजी यात्रा, हों कलश, सिद्ध कूट पहिचान॥

(16)

लोग हजारों आयँ जु, पुण्य कमाते रोज।
रोग, शोक से दूर हों, ध्यान-योग पा ओज॥

(17)

साधु जन से सीख लें, भक्ति सु पूजा दान।
मिले धर्म व साधु जब, होगा तब कल्याण॥

रचना काल-चैत्र कृ.पञ्चमी वी.नि.सं.2541,
दिनांक 10-3-2015, स्थान-सि.क्षेत्र सिद्धवरकूट

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे.....

अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

इष्टधनाद्युत्तरतो द्विगुणत्रिगुणद्विभागत्रिभागादीष्टधनाद्युत्तरानयनसूत्रम्[1]—

इष्टविभक्तेष्टधनं द्विष्ठं[2] तत्प्रचयताडितं प्रचयः ।
तत्प्रभवगुणं प्रभवो गुणभागस्येष्टवित्तस्य ॥२९॥

अत्रोद्देशकः

प्रभवस्त्र्यर्धो रूपं प्रचयः पञ्चाष्टमः समानपदम् ।
इच्छाधनमपि तावत्कथय सखे कौ मुखप्रचयौ ॥३०॥
प्रचयादादिर्द्विगुणस्त्रयोदशाष्टादशं पदं स्वेष्टम् । वित्तं तु सप्तषष्टिः षड्घनभक्ता वदादिचयौ ॥३१॥
मुखमेकं द्वित्र्यंशः प्रचयो गच्छः समश्चतुर्नवमः ।
धनमिष्टं द्वाविंशतिरेकाशीत्या वदादिचयौ ॥३२॥

---

१ M गुणभागाद्युत्तरानयनसूत्रम् ।
२ M प्रचयेन ।
३ M गुणभागाद्युत्तरेच्छायाः ।
४ यह श्लोक M में ३१ वें श्लोक के स्थान में है तथा B में छूटा हुआ है ।

दी हुई समान्तर श्रेढि के ज्ञात योग, प्रथम पद और प्रचय से किसी श्रेढि के प्रथमपद और प्रचय निकालना जबकि इष्ट योग दी गई श्रेढि के ज्ञात योग से दुगुना, तिगुना, आधा, एक तिहाई, अथवा उसका अपवर्त्य या अंश हो—

हल करने की सुविधा के लिए इष्ट योग को ज्ञात योग द्वारा विभाजित कर दो स्थानों में रखो । यह भजनफल, जब ज्ञात प्रचय द्वारा गुणित किया जाता है तब चाहा हुआ प्रचय प्राप्त होता है । और वही भजनफल, जब ज्ञात प्रथमपद द्वारा गुणित होता है तब चाहे हुए प्रथम पद को उत्पन्न करता है ॥२९॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

किसी श्रेढि का प्रथम पद $\frac{३}{२}$ है, प्रचय १ है और पदों की संख्या (जो दी हुई तथा इष्ट, दोनों श्रेढियों, के लिये उभयनिष्ठ है) $\frac{५}{८}$ है । इष्ट श्रेढि तथा दी गई श्रेढि का योग अलग-अलग $\frac{५}{८}$ हैं । हे मित्र ! इष्ट श्रेढि का प्रथमपद तथा प्रचय निकालो ॥३०॥ (प्रचय १ है) और प्रथमपद प्रचय का दुगुना है; पदों की संख्या $\frac{१३}{१८}$ है; इष्ट श्रेढि का योग $\frac{६७}{२१६}$ है । प्रथमपद और प्रचय निकालो ॥३१॥ प्रथम पद १ है, प्रचय $\frac{२}{३}$ और पदों की संख्या दोनों (दी गई श्रेढि और इष्ट श्रेढि) के लिये उभय-साधारण $\frac{४}{९}$ है । इष्ट श्रेढि का योग $\frac{२२}{८१}$ है । इष्ट श्रेढि के प्रथमपद और प्रचय निकालो ॥३२॥

---

(२९) ८४ वीं गाथा का नोट अध्याय २ में देखिये ।

(३३) प्रतीक रूप से, $न = \frac{\sqrt{२\,बय + \left(\frac{ब}{२} - अ\right)^{२}} + \frac{ब}{२} - अ}{ब}$

अध्याय २ की गाथा ६९ वीं का नोट भी देखिये ।

गच्छानयनसूत्रम्—

द्विगुणचयगुणितवित्तादुत्तरदलमुखविशेषकृतिसहितात् ।
मूलं प्रचयार्धयुतं प्रभवोनं चयहृतं गच्छः ॥३३॥

प्रकारान्तरेण तदेवाह—

द्विगुणचयगुणितवित्तादुत्तरदलमुखविशेषकृतिसहितात् ।
मूलं क्षेपपदोनं प्रचयेन हृतं च गच्छः स्यात् ॥३४॥

अत्रोद्देशकः

द्विपञ्चांशो वक्त्रं त्रिगुणचरणःस्यादिह चयः
षडंशः सप्तघ्नत्रिकृतिविहृतो वित्तमुदितम् ।
चयः पंचाष्टांशः पुनरपि मुखं त्र्यष्टममिति
त्रिचत्वारिंशाःस्वं प्रिय वद पदं शीघ्रमनयोः ॥३५॥

आद्युत्तरानयनसूत्रम्—

गच्छाप्तगणितमादिर्विगतैकपदार्धगुणितचयहीनम् ।
पदहृतधनमाद्यूनं निरेकपददलहृतं प्रचयः ॥३६॥

---

१ नीचे लिखे हुए दो श्लोकों में स्थान में M में इस प्रकार का पाठ है—
अष्टोत्तरगुणराशीत्यादिना इष्ट-धनगच्छ आनेतव्यः ।
इसके साथही, परिकर्म व्यवहार की ७० वीं गाथा की पुनरावृत्ति है ।
२ K और B प्रभवो गच्छाप्तधनम् ।

समान्तर श्रेढि में पदों की संख्या निकालने के लिये नियम—

प्रथम पद और प्रचय की आधी राशि के अन्तर के वर्ग में, प्रचय की दुगुनी राशि को श्रेढि के योग द्वारा गुणित करने से प्राप्त राशि जोड़ी जाती है । इस प्राप्त राशि के वर्गमूल में प्रचय की आधी राशि जोड़ी जाती है । इस योगफल को प्रथम पद द्वारा ह्रासित कर और तब प्रचय द्वारा भाजित करने पर श्रेढि के पदों की संख्या प्राप्त होती है ॥३३॥

पदों की संख्या निकालने की दूसरी विधि—

प्रथमपद और प्रचय की आधी राशि के अन्तर के वर्ग में, प्रचय की दुगुनी राशि को श्रेढि के योग द्वारा गुणित करने से प्राप्त फल मिलाते हैं । योगफल के वर्गमूल में से क्षेपपद घटाते हैं । जब इसे प्रचय द्वारा भाजित करते हैं तब श्रेढि के पदों की संख्या प्राप्त होती है ॥३४॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

दी हुई श्रेढि के सम्बन्ध में, प्रथम पद $\frac{२}{५}$ है, प्रचय $\frac{३}{४}$ है और योग $\frac{७}{६४}$ है । पुनः, दूसरी श्रेढि के सम्बन्ध में, प्रचय $\frac{५}{८}$ है, प्रथमपद $\frac{३}{८}$ है और योग $\frac{३}{४०}$ है । हे मित्र ! इन दो श्रेढियों के विषय में, पदों की संख्या शीघ्र निकालो ॥३५॥

प्रथम पद और प्रचय निकालने के लिये नियम—

श्रेढि के योग को पदों की संख्या द्वारा भाजित करने से प्राप्त राशि जब एक कम पदों की संख्या की आधी राशि और प्रचय के गुणनफल द्वारा ह्रासित की जाती है, तब श्रेढि का प्रथम पद उत्पन्न होता है । जब योग को पदों की संख्यासे भाजित कर और प्रथमपद द्वारा ह्रासित कर एक कम पदों की संख्या की आधी राशि द्वारा भाजित करते हैं तब प्रचय प्राप्त होता है ।

---

(३४) क्षेप पद के लिये अध्याय २ की ७० वीं गाथा देखिये ।

(३६) द्वितीय अध्याय की ७४ वीं गाथा का नोट देखिये ।

अत्रोद्देशकः

त्रिचतुर्थचतुःपञ्चमचयगच्छे खेषुशशिहृतैकत्रिंशद्- ।
वित्ते त्र्यंशचतुःपञ्चममुखगच्छे च वद मुखं प्रचयं च ।।३७।।

इष्टगच्छयोर्व्यस्ताद्युत्तरसमधनद्विगुणत्रिगुणद्विभागत्रिभागधनानयनसूत्रम्—
व्येकात्महतो गच्छः स्वेष्टघ्नो द्विगुणितान्यपदहीनः ।
मुखमात्मोनान्यकृतिर्द्विकेष्टपदघातवर्जिता प्रचयः ।।३८।।

अत्रोद्देशकः

एकादिगुणविभागः स्वं व्यस्ताद्युत्तरे हि वद मित्र ।
द्वित्र्यंशौनैकादशपञ्चांशकमिश्रनवपदयोः ।।३९।।

गुणधनगुणसंकलितधनयोः सूत्रम्—
पदमितगुणहतिगुणितप्रभवः स्याद्गुणधनं तदाद्यूनम् ।
एकोनगुणविभक्तं गुणसंकलितं विजानीयात् ।।४०।।

उदाहरणार्थ प्रश्न

दो श्रेढियों के प्रथम पद और प्रचय निकालो जब कि एक दशा में योग $\frac{३१}{१५०}$ है, $\frac{३}{४}$ प्रचय है और $\frac{४}{५}$ पदों की संख्या है, तथा अन्य दशा में योग $\frac{३१}{१५०}$ है, $\frac{१}{३}$ प्रथम पद है और $\frac{४}{५}$ पदों की संख्या है ।।३७।।

जब पदों की संख्या कोई भी चुनी हुई राशि हो, तब दो श्रेढियों के सम्बन्ध में परस्पर बदले हुए प्रथम पद, प्रचय, तथा उनके योग (जिनमें एक-दूसरे के बराबर अथवा एक दूसरे से दुगुना, तिगुना, आधा या तिहाई हो) निकालने के लिये नियम—

एक श्रेढि के पदों की संख्या स्वतः के द्वारा गुणित कर एक द्वारा ह्रासित करते हैं। इसे दोनों श्रेढियों के योग की इष्ट निष्पत्ति द्वारा गुणित कर, और तब, दूसरी श्रेढि के पदों की संख्या की दुगुनी राशि द्वारा ह्रासित कर परस्पर बदलने योग्य प्रथम पद प्राप्त करते हैं ।।३८।।

दूसरी श्रेढि के पदों की संख्या का वर्ग, पदों की संख्या द्वारा ही ह्रासित करते हैं। इसे इष्ट निष्पत्ति और प्रथम श्रेढि के पदों की संख्या के गुणनफल की दुगुनी राशि द्वारा ह्रासित करने पर, परस्पर बदलने योग्य उस श्रेढि का प्रचय उत्पन्न होता है ।

उदाहरणार्थ प्रश्न

दो श्रेढियों के सम्बन्ध में, जिनमें १०$\frac{१}{३}$ और ९$\frac{१}{५}$ पदों की संख्या है, प्रथम पद और प्रचय परस्पर बदलने योग्य हैं। एक श्रेढि का योग दूसरी श्रेढि के योग का अपवर्त्य अथवा अंश है जो एक से आरम्भ होनेवाली प्राकृत संख्याओं द्वारा गुणन अथवा भाग द्वारा प्राप्त हुआ है। हे मित्र ! इन योगों को, प्रथम पदों और प्रचयों को निकालो ।।३९।।

गुणोत्तर श्रेढि में गुणधन एवं श्रेढि का योग निकालने के लिये नियम—

गुणोत्तर श्रेढि में प्रथमपद को, जितनी पदों की संख्या होती है उतनी बार साधारण निष्पत्ति द्वारा गुणित करने पर गुणधन प्राप्त होता है। यह गुणधन प्रथमपद द्वारा ह्रासित होकर तथा एक कम साधारण निष्पत्ति द्वारा भाजित होकर गुणोत्तर श्रेढि के योग के बराबर हो जाता है ।।४०।।

(३८) द्वितीय अध्याय की ८६ वीं गाथा का नोट देखिये ।
(४०) द्वितीय अध्याय की ९३ वीं गाथा का नोट देखिये ।

गुणसंकलितान्त्यधनानयने तत्संकलितानयने च सूत्रम्—

गुणसंकलितान्त्यधनं विगतैकपदस्य गुणधनं भवति ।
तद्गुणगुणं मुखोनं व्येकोत्तरभाजितं सारम् ।।४१।।

अत्रोद्देशकः

प्रभवोऽष्टमश्चतुर्थः प्रचयः पञ्च पदमत्र गुणगुणितम् ।
गुणसंकलितं तस्यान्त्यधनं चाचक्ष्व मे शीघ्रम् ।।४२।।

गुणधनसंकलितधनयोराद्युत्तरपदान्यपि पूर्वोक्तसूत्रैरानयेत् ।

समानेष्टोत्तरगच्छसंकलितगुणसंकलितसमधनस्याद्यानयनसूत्रम्—

मुखमेकं चयगच्छाविष्टौ मुखवित्तरहितगुणचित्या ।
हृतचयधनमादिगुणं मुखं भवेद्द्विचितिधनसाम्ये ।।४३।।

१ केवल B में प्राप्य ।

गुणोत्तर श्रेढि का अन्तिमपद तथा योग निकालने के लिये नियम—

गुणोत्तर श्रेढि का अंत्यधन अथवा अंतिम पद, दूसरी ऐसी ही श्रेढि का गुणधन होता है जिसमें पदों की संख्या एक न्यून होती है । यह अंत्यधन साधारण निष्पत्ति द्वारा गुणित होकर और प्रथम पद द्वारा ह्रासित होकर तथा एक कम साधारण निष्पत्ति द्वारा भाजित होकर श्रेढि के योग को उत्पन्न करता है ॥४१॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

गुणोत्तर श्रेढि के सम्बन्ध में प्रथमपद $\frac{१}{८}$ है, साधारण निष्पत्ति $\frac{१}{४}$ है और पदों की संख्या ५ है । मुझे शीघ्र बतलाओ कि श्रेढि का योग तथा अंतिम पद क्या क्या हैं ? ॥४२॥

समान योग वाली दो समान्तर एवं गुणोत्तर श्रेढि के उभय साधारण प्रथम पद को निकालने के लिये नियम, जब कि उनकी चुनी हुई पदों की संख्या बराबर हो और इसी तरह से वरण किये गये प्रचय और साधारण निष्पत्ति बराबर हों—

प्रथम पद को एक लेते हैं, पदों की संख्या और साधारण निष्पत्ति तथा प्रचय मन से कुछ भी चुन लिये जाते हैं । यहां उत्तर धन को गुणोत्तर श्रेढि के योग में से आदि धन को घटाने से प्राप्त हुई राशि द्वारा भाजित करते हैं । इसे चुने हुए प्रथम पद से गुणित करने पर, इन दोनों श्रेढियों के सम्बन्ध में चाहा हुआ उभयसाधारण प्रथमपद उत्पन्न होता है ॥४३॥

(४१) द्वितीय अध्याय की ९५ वीं गाथा का नोट देखिये ।

[पिछले अध्याय में कथित नियमों द्वारा गुणधन और श्रेढि के योग के सम्बन्ध में गुणोत्तर श्रेढि के प्रथमपद, साधारण निष्पत्ति और पदों की संख्या निकाली जा सकती हैं । इन नियमों के लिये अध्याय २ की ८७, ९७, १०१ और १०३ वीं गाथायें देखिये ।]

(४३) आदि धन और उत्तरधन के लिये ६३ और ६४ वीं गाथायें (अध्याय २ देखिये । यह नियम प्रतीक रूप से इस तरह साधित होता है— $अ = \left\{ \frac{न(न-१)}{२} \times ब \right\} \Big/ \left\{ \frac{(र^{न}-१)१}{र-१} - न \times १ \right\}$ जहाँ ब = र है । सरल साधन के हेतु प्रथमपद को १ चुन लिया जाता है, परंतु स्पष्ट है कि कोई राशि पहिले इस तरह मानी जा सकती है । आदि धन और उत्तरधन के द्वारा नियम के कथन को सरल बनाने के लिये यहाँ प्रथमपद को मान लिया गया है । यहां प्राप्त सूत्र गुणोत्तर श्रेढि के योगसूत्र और समान्तर श्रेढि के सूत्र को समीकार रूप में लिखने से मिला है । यहां ध्यान देने योग्य शब्द चय है जिसका उपयोग गुणोत्तर और समान्तर श्रेढि, दोनों के क्रमशः साधारण निष्पत्ति और प्रचय के लिये किया गया है ।

अत्रोद्देशकः

भाववार्धिभुवनानि पदान्यम्भोधिपञ्चमुनयस्त्रिहृतास्ते ।
उत्तराणि वदनानि कति स्युर्युग्मसंकलितवित्तसमेषु ॥४४॥

इति भिन्नसंकलितं समाप्तम् ।

भिन्नव्युत्कलितम्

भिन्नव्युत्कलिते करणसूत्रं यथा—

गच्छाधिकेष्टमिष्टं चयहतमूनोत्तरं द्विहादियुतम् । शेषेष्टपदार्धगुणं व्युत्कलितं स्वेष्टवित्तं च ॥४५॥

शेषगच्छस्याद्यानयनसूत्रम्—

प्र[1]चयार्धोनः प्रभवो युतश्चयघ्नेष्टपदचयार्धाभ्याम् । शेषस्य पदस्यादिश्चयस्तु पूर्वोक्त एव भवेत् ॥४६॥
गुणगुणितेऽपि चयादी तथैव भेदोऽयमत्र शेषपदे ।
इष्टपदमितगुणाहतिगुणितप्रभवो भवेद्वक्त्रम् ॥४७॥

१ M प्रचयगुणितेष्टगच्छस्सादिः प्रभवः पदस्य शेषस्य । पूर्वोक्तः प्रचयस्स्यादिष्टस्य प्राक्तनादेव ॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

पदों की संख्या क्रमशः ५, ४ और ३ है । साधारण निष्पत्ति तथा बराबर प्रचय क्रमशः $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{३}$ और $\frac{७}{३}$ हैं । इन समान योग वाली गुणोत्तर तथा समान्तर श्रेढियों के संवादी प्रथम पदों की अर्हाओं (values) को निकालो ॥४४॥

इस प्रकार, कलासवर्ण व्यवहार में, संकलित नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

भिन्न व्युत्कलित [श्रेढिरूप भिन्नों का व्युत्कलन]

भिन्न व्युत्कलित क्रिया को करने का नियम निम्नलिखित है —

श्रेढि में कुल पदों की संख्या को चुने हुए पदों की संख्या में सम्मिलित करो और स्वयं चुनी हुई पदों की संख्या को अलग से लो । इन राशियों में से प्रत्येक को प्रचय द्वारा गुणित करो और गुणनफलों को प्रचय द्वारा ह्रासित करो तथा दो द्वारा गुणित करो । इन परिणामी राशियों को जब क्रमशः शेषपदों की संख्या की आधी राशि और पदों की चुनी हुई संख्या की आधी राशि द्वारा गुणित करते हैं तब क्रम से शेष श्रेढि का योग तथा श्रेढि के चुने हुए भाग का योग प्राप्त होता है ॥४५॥

शेष गच्छ सम्बन्धी प्रथम पद को निकालने के लिये नियम—

श्रेढि का प्रथमपद, प्रचय की आधी राशि द्वारा ह्रासित होकर और प्रचय द्वारा गुणित चुनी हुई पदों की संख्या द्वारा मिलाया जाकर तथा प्रचय की आधी राशि द्वारा भी मिलाया जाकर शेष श्रेढि के शेष पदों की संख्या के प्रथम पद को उत्पन्न करता है । जैसा प्रचय दी हुई श्रेढि में होता है वैसा ही प्रचय शेष श्रेढि का होता है ॥४६॥ गुणोत्तर श्रेढि के विषय में भी, साधारण निष्पत्ति और प्रथमपद ठीक वैसे ही होते हैं जैसे कि दी हुई श्रेढि और उसके चुने हुए भाग में होते हैं। दी हुई श्रेढि के प्रथम पद में साधारण निष्पत्ति को उतने बार गुणित करते हैं जितनी कि चुनी हुई पदों की संख्या होती है। प्राप्त गुणनफल शेष श्रेढि का प्रथमपद होता है । शेष श्रेढि के प्रथमपद और दी हुई श्रेढि के प्रथमपद में यही अंतर होता है ॥४७॥

(४५) द्वितीय अध्याय की १०६ वीं गाथा का नोट देखिये ।
(४६) द्वितीय अध्याय की १०९ वीं गाथा का नोट देखिये ।
(४७) द्वितीय अध्याय की ११० वीं गाथा का नोट देखिये ।

अत्रोद्देशकः

पादोत्तरं दलास्यं पदं त्रिपादांशकःसमुद्दिष्टः । स्वेष्टं चेतुर्थभागः[1] किं व्युत्कलितं समाकलय[2] ॥४८॥
प्रभवोऽर्धं पञ्चांशः प्रचयो द्वित्र्यंशको भवेद्गच्छः । पञ्चाष्टांशःस्वेष्टं पदमृणमाचक्ष्व गणितज्ञ ॥४९॥
आदिश्चतुर्थभागः प्रचयः पञ्चांशकस्त्रिपञ्चांशः ।
गच्छो वाञ्छागच्छो दशमो व्यवकलितमानं किम् ॥५०॥
त्रिभागौ द्वौ वक्त्रं पञ्चमांशश्चयःस्यात् पदं त्रिघ्नः पादः पञ्चमःस्वेष्टगच्छः ।
षडंशःसप्तांशो वा व्ययः को वद त्वं कलावास प्रज्ञाचन्द्रिकाभास्वदिन्दो ॥५१॥
द्वादशपदं चतुर्थर्णोत्तरमर्धोनपञ्चकं वदनम् । त्रिचतुःपञ्चाष्टेष्टपदानि व्युत्कलितमाकलय ॥५२॥

गुणसंकलितव्युत्कलितोदाहरणम् ।

द्वित्रिभागरहिताष्टमुखं द्वित्र्यंशको गुणचयोऽष्ट पदं भोः ।
मित्र रत्नगतिपञ्चपदानीष्टानि शेषमुखवित्तपदं किम् ॥५३॥

इति भिन्नव्युत्कलितं समाप्तम्[3] ।

---

१ M च चतुर्भागः ।

२ M किं व्युत्कलितं समाकलय ।

३ K और M में इसके पश्चात् "इति सारसङ्ग्रहे महावीराचार्यस्य कृतौ द्वितीयव्यवहारस्समाप्तः" जोड़ा गया है । यह वास्तव में भूल प्रतीत होती है ।

उदाहरणार्थ प्रश्न

दी हुई श्रेढि में प्रचय $\frac{1}{4}$ है, प्रथमपद $\frac{1}{2}$ है, पदों की संख्या $\frac{3}{4}$ है और चुनी हुई पदों की (हटाई जाने वाली) संख्या $\frac{1}{4}$ है । ऐसी श्रेढि की शेष श्रेढि का योग निकालो ॥४८॥ समान्तर श्रेढि के सम्बन्ध में प्रथमपद $\frac{1}{2}$ है, प्रचय $\frac{1}{5}$ है और पदों की संख्या $\frac{2}{3}$ है । यदि हटाये जाने वाले पदों की संख्या $\frac{5}{8}$ है तो हे गणितज्ञ, शेष श्रेढि का योगफल बताओ ॥४९॥ दी हुई श्रेढि में प्रथमपद $\frac{1}{4}$ है, प्रचय $\frac{1}{5}$ है और पदों की संख्या $\frac{3}{5}$ है । यदि चुनी हुई पदों की संख्या $\frac{1}{10}$ हो तो शेष श्रेढि का योगफल बतलाओ ॥५०॥ प्रथमपद $\frac{2}{3}$ है, प्रचय $\frac{1}{5}$ है, पदों की संख्या $\frac{3}{4}$ है और चुनी गई पदों की संख्या $\frac{1}{5}$, $\frac{1}{6}$ अथवा $\frac{1}{7}$ है । हे चंद्रमा के प्रकाश रूपी बुद्धि से चमकते हुए चंद्रमा कि भांति कला के वास ! मुझे बतलाओ कि शेष पदों की संख्या का योग क्या होगा ? ॥५१॥ दी हुई श्रेढि के पदों की संख्या १२ है, प्रचय $-\frac{1}{4}$ (ऋण $\frac{1}{4}$) है और प्रथमपद ४$\frac{1}{2}$ है तथा चुनी गई पदों की संख्याएं क्रमशः ३, ४, ५ अथवा ८ हैं । शेष पदों की संख्या का योगफल अलग-अलग निकालो ॥५२॥

गुणोत्तर श्रेढि में व्युत्कलित् का उदाहरणार्थ प्रश्न

प्रथमपद ७$\frac{1}{3}$ है, साधारण निष्पत्ति $\frac{2}{3}$ है और पदों की संख्या ८ है । चुनी हुई पदों की संख्याएं क्रमशः ३, ४, ५ हैं । बतलाओ कि शेष श्रेढियों के सम्बन्ध में प्रथमपद, योग और पदों की संख्या क्या-क्या हैं ? ॥५३॥

इस प्रकार, कलासवर्ण व्यवहार में, भिन्न व्युत्कलित् नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

---

(५१) कला के यहाँ दो अर्थ हैं—प्रथम तो ज्ञान और अन्य "चंद्रमा के अंक" ।

कलासवर्णषड्जातिः

इतः परं कलासवर्णे षड्जातिमुदाहरिष्यामः—
भागप्रभागावथ भागभागो भागानुबन्धः परिकीर्तितोऽतः।
भागापवाहः सह भागमात्रा षड्जातयोऽमुत्र कलासवर्णे ॥५४॥

भागजातिः

तत्र भागजातौ करणसूत्रं यथा—
सदृशहृतच्छेदहतौ मिथोंऽशहारौ समच्छिदावंशौ।
लुप्तैकहरौ योज्यौ त्याज्यौ वा भागजातिविधौ ॥५५॥

कलासवर्ण षड्जाति (छः प्रकार के भिन्न)

अब हम छः प्रकार के भिन्नों का प्रतिपादन करेंगे—

भाग (साधारण भिन्न), प्रभाग (भिन्नों के भिन्न), भागभाग (जटिल या संकर भिन्न complex fractions), भागानुबंध (संयव भिन्न fractions in association), भागापवाह (वियवन भिन्न fractions in dissociation) और भाग मात्र (भिन्न जिनमें ऊपर कथित भिन्नों में से दो या अधिक भिन्न सम्मिलित हों); ये भिन्नों के छः भेद कहलाते हैं ॥५४॥

भागजाति [साधारण भिन्नों का जोड़ और घटाना]

साधारण भिन्नों का क्रिया (करण) सम्बन्धी नियम—

दिये गये दो साधारण भिन्नों सम्बन्धी क्रियाओं में प्रत्येक के अंश और हर को, उभय साधारण गुणनखंड द्वारा हरों को विभाजित करने से प्राप्त भजनफलों द्वारा एकान्तर से गुणित करते हैं। वे भिन्न इस तरह प्रह्रासित होकर समान हर वाले हो जाते हैं। तब इनमें से कोई एक हर अलग कर, अंशों को जोड़ते अथवा घटाते हैं [ताकि दूसरे समान हर के सम्बन्ध में परिणामी राशि अंश हो] ॥५५॥

---

(५५) भिन्नों को साधारण हरों में प्रह्रासित करने का नियम केवल भिन्न युग्म के लिये प्रयोज्य है। निम्नलिखित उदाहरण से यह नियम स्पष्ट हो जावेगा—

$\frac{\text{अ}}{\text{कख}} + \frac{\text{ब}}{\text{खग}}$ को हल करने के लिये यहाँ, "अ" और "कख" को "ग" से गुणित करते हैं जोकि दूसरे भिन्न के हर "खग" को हरों के साधारण गुणनखण्ड ख द्वारा विभाजित करने पर भजनफल "ग" के रूप में प्राप्त होता है। इसी प्रकार दूसरे भिन्न में "ब" और "खग" को "क" से गुणित करते हैं जो प्रथम भिन्न के हर "कख" को हरों के साधारण गुणनखण्ड "ख" द्वारा विभाजित करने पर "क" के रूप में प्राप्त होता है। इस तरह हमें क्रमशः $\frac{\text{अग}}{\text{कखग}}$ और $\frac{\text{बक}}{\text{कखग}}$ प्राप्त होते हैं। इस तरह $\frac{\text{अग}}{\text{कखग}} + \frac{\text{बक}}{\text{कखग}} = \frac{\text{अग} + \text{बक}}{\text{कखग}}$.

क्रमशः....

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

गतांक से आगे...

तपोनिलय में वर्षायोगः-

सन् 2000 का वर्षायोग तपोनिलय के भक्त गणों की भक्ति से मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ चातुर्मास कलश स्थापना ता. 15.07.2000 को हुई। चातुर्मास में मुनिश्री ने श्रावकों के लिए पदार्थसारम् (तमिल भाषा में) एवं चौबीस-ठाणा पढ़ाया था। मुनिश्री ने स्वयं चौबीस ठाणा शास्त्र का तमिल भाषा में अनुवाद किया था। षोडसकारण पर्व में व्रतियों की संख्या बढ़ती गयी। सबने उपवास व एकासन आदि के माध्यम से तीर्थंकर पद को देने वाले इस षोडसकारण पर्व को सोल्लास मनाया। दशलक्षण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर भी लगा। मुनिश्री ने दशलक्षण पर्व में आहारचर्या में पेयाहार मात्र लेकर अपूर्व साधना की। सुबह दशलक्षण के प्रत्येक धर्म पर तमिल में प्रवचन दिये और दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र के एक-एक अध्याय का अर्थ भी बतलाया। इस चातुर्मास में प्रति रविवार को तमिल समण (जैन) शास्त्रों की संगोष्ठी हुई। जिसमें तमिल शास्त्रों का जैसे यशोधर काव्यं, शिलपधिकारम्, वलयापति, चूडामणि, जीवकचिंतामणी, नीलकेशी, मेरुमंदर पुराणं, पिरुंकथै, त्रिरुनूट्टुअन्तादि, अरनेरिसारं, तिरुकलम्पकम्, श्रीपुराणं, नालडियार, अरूंगलचेप्पु, तिरुकुरल, एलादि, सिरुपंचमूलम, पलमौली नानूरु, करतललोकाणी आदि शास्त्रों पर प्रत्येक रविवार को एक-एक विद्वानों ने शास्त्र के ऊपर आलेख पढ़कर वक्तव्य दिये। तत्पश्चात् मुनिश्री ने भी अपने प्रवचन में उस शास्त्र के महत्त्व को तमिल भाषा में बतलाया। चातुर्मास के अन्त समय पर इन संगोष्ठियों पर परीक्षा भी सम्पन्न हुई। बहुत लोगों ने परीक्षा में लाभ लिया। इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुए लोगों को 'सम्यग्ज्ञान विभूषण' पद से विभूषित किया गया।

मुनिश्री आर्जवसागरजी के द्वारा धार्मिक पाठशालाओं में कोर्स रूप में जैसे प्रथम वर्ष जैन संस्कार व जैनागम संस्कार, दूसरे वर्ष धर्मसंस्कार भाग 1 व धर्मसंस्कार भाग 2, तीसरे वर्ष अरूंगलचेप्पु (रत्नकरण्डक श्रावकाचार) चौथे वर्ष तत्त्वार्थ सूत्र और पाँचवे वर्ष पदार्थसारं एवं चौबीस ठाणा रखे गये थे। इन पाँचों वर्ष के कोर्स में पाँचों वर्षों तक परीक्षा देकर उत्तीर्ण हुये लोगों के लिए ता. 05.11.2000 को 'सिद्धान्त भूषण' पद से विभूषित किया गया। और भी कई प्रभावनापूर्ण धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। वर्षायोग के अन्त में ता. 29.10.2000 को पिच्छि परिवर्तन के कार्यक्रम में गुरुवर की पुरानी पिच्छी लेने का सौभाग्य श्री देवदास दम्पति वंधवासी को मिला। पोन्नूरमलै में ता. 31.12.2000 से 02.01.2001 तक चारित्र शुद्धि विधान किया गया, और तपोनिलय में एलाचार्य (कुन्द-कुन्द) औषधालय का भी उद्घाटन हुआ।

विधानोपरान्त मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ विहार पोन्नूर ग्राम होते हुए वंधवासी के लिए हुआ। वहाँ पर ठहर करके सम्यग्दर्शन विषय पर विशेष प्रवचनों के माध्यम से धर्म की प्रभावना की। श्रावकों ने अपने-अपने घर पर चौका लगाकर आहारदान का लाभ लिया। फिर वेन्कुन्डरम्, ऐरम्बूर, आयलवाड़ी, पेरणमल्लूर, मोटूर होते हुए आरनी (पुदुकामूर) पहुँचे।

पुदुकामूर में नये जिनालय का शिलान्यासः-

आरनी में पुदुकामूर कॉलोनी में नये जिनालय हेतु शिलान्यास कार्यक्रम ता. 05.01.2001 को जहाँ पर मन्दिर बनना था वहीं पर पंडाल बनाकर मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में किया गया। जिसमें एक ही परिवार के तीनों भाईयों में से बड़े भाई ने मन्दिर बनाने के लिए भूमि दान में दी, और बीच के भाई ने मुनि संघ को ठहरने हेतु आवास दान हेतु मुनि निवास बनवाने एवं मूलनायक महावीर प्रतिमा दान में देने का संकल्प किया। सबसे छोटे भाई ने मन्दिर का शिखर बनाने का भाव प्रकट किया। ऐसे एक ही परिवार ने पूरा एक मन्दिर बनवाने का बड़े उत्साह पूर्वक साहस किया। मुनिश्री ने अपने मुखारविन्द से व्रतियों के लिए एवं श्रावकों के लिए स्वयंभू स्तोत्र का उच्चारण एवं अर्थ पढ़ाया। इसी संदर्भ में जुगुल ग्राम (कर्नाटक) से पधारी दो बहिनों ने अपने पिता महावीर कुलचे एवं माता श्री के साथ मुनिश्री का दर्शन किया। जब मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज जुगुल ग्राम गये थे तब उनके उपदेश से इन बहिनों ने मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाने का भाव प्रगट किया था, फिर आचार्यश्री विद्यासागरजी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। जब मुनिश्री के दर्शन करने आयीं तब तमिलनाडु की धर्म प्रभावना देखकर बहुत हर्षित हुयीँ। चौका भी लगाया और मुनिश्री आर्जवसागरजी को नवधा भक्ति पूर्वक अपने चौके में आहार दान देने का लाभ भी प्राप्त किया। पश्चात् मुनिश्री का मोटूर गाँव की ओर विहार हो गया। वहाँ पर भी ता. 29.02.2001 को श्री 1008 चन्द्रप्रभु नये जिनालय हेतु शिलान्यास हुआ।

अहिंसा रथ प्रारम्भः-

पश्चात् मुनिश्री का ससंघ विहार चेय्यार की ओर हुआ। वहाँ पर भगवान महावीर के 2600 वाँ जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सुशील गंगवाल पाण्डिचेरी की लारी को एक अहिंसा रथ का रूप एक माह के लिए नि:शुल्क दिया गया। जिसमें चरण सहित पावापुरी की संरचना सहित अहिंसामय चित्र एवं अहिंसा संदेश रूप महावीर भगवान का चित्र, भगवान के पाँच कल्याणकों का चित्र एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी का चित्र और मुनिश्री आर्जवसागरजी का चित्र आदि से वह रथ सजा हुआ था। उस रथ ने ता. 09.03.2001 को पूरे तमिलनाडु की यात्रा हेतु चेय्यार नगर से प्रयाण किया।

तपोनिलय में 2600 वाँ महावीर जयन्तीः-

पश्चात् मुनिश्री का ससंघ विहार तपोनिलय की ओर हुआ। वहाँ ता. 06.04.2001 को श्री अमरचंद ठोलिया, पाण्डीचेरी वालों की ओर से कंकरीट सीमेंट से बनाये गये तीन लोक के स्वरूप की संरचना का उद्घाटन हुआ। पश्चात् ता.6, 7 एवं 8.04.2001 को तीन दिवसीय कार्यक्रम के रूप में भगवान महावीर का 2600 वाँ जन्म जयन्ती एवं मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का 13वाँ दीक्षा दिवस महोत्सव बहुत बड़े रूप से मनाया गया।

अहिंसा रथ भी पूरी यात्रा करके उस दिन तपोनिलय में आ गया, और श्रीपालन जैन D.G.P. आदि विद्वत्गण सबने अपने वक्तव्य दिये। फिर मुनिश्री ने भी अपनी अमृतमय वाणी से भगवान महावीर का जीवन परिचय बताया, और इसी कार्यक्रम में तमिल भाषा में नवीन प्रकाशित 'जैन धर्म और विज्ञान' पुस्तक एवं तत्त्वार्थ सूत्र सार्थ कृति का (मुनिश्री के प्रवचन सहित तमिल में) विमोचन किया गया।

ता. 8/4/2001 को मुनिसंघ के सान्निध्य में महावीर स्कूल का उद्घाटन किया गया, जिसमें मिनिस्टर पिच्चाण्डी आये हुये थे। उन्होंने मुनिश्री के साथ दयोदय गोशाला का भी अवलोकन किया।

तिरूवन्नामलै में नये मन्दिर शिलान्यासः-

पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागरजी ससंघ पोन्नूर, गूणंबाडी आदि गाँवों से होते हुए वलदुराम कुण्डरम् क्षेत्र पर पहुँचे। वहीं पर आहारचर्या भी हुई। फिर बाद में विहार करके सोमासपाडी गाँव में रात रुक करके सुबह तिरूवन्नामलै नगर पहुँचे। वहाँ पर मुनिश्री के उपदेश प्रेरणा एवं आशीर्वाद से निर्मित होने वाले श्री श्रेयांसनाथ भगवान के नये मन्दिर हेतु ता. 29.04.2001 को शिलान्यास का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस जिनालय के निर्माण में विशेष सहयोगी एवं भूमि प्रदाता श्री अर्हदास (अरुगदास) (Retd.) B.D.O. तिरुवन्नामलै वाले थे। फिर नल्लवन पालयम में अक्षय तृतिया पर्व मनाया गया। फिर वहाँ मुनिश्री सोमसपाड़ी आये वहाँ पर ता. 27.05.2001 को श्रुतपञ्चमी पर्व मनाया गया। फिर वहाँ से विहार करके मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ तच्चाम्बाड़ी, देवीकापुरम्, ओदलवाडी, तच्चूर, मोटूर आदि गाँव से होते हुए एवं धर्म प्रभावना करते हुए आरनी पहुँचे।

(आरनी) पुदुकामूर में वर्षायोगः-

(आरनी) पुदुकामूर के श्रावकों के कई बार किये गये विशेष निवेदन से उन्हें चातुर्मास करवाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। ता. 04.07.2001 को वर्षायोग प्रतिष्ठापन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। वर्षायोग में स्वयंभूस्तोत्र का अर्थ एवं छहढाला शास्त्र का स्वाध्याय सम्पन्न हुआ, और भव्यों को तीर्थंकर

प्रकृति का संचय कराने वाला सोलहकारण पर्व भी मनाया गया। जिसमें करीब आठ-दस लोगों ने एक आहार एक उपवास तथा बहुत लोगों ने एकासन से बत्तीस दिनों तक पूरे सोलहकारण व्रत किये। इसी के बीच दशलक्षण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर भी लगाया गया, इसमें भी बहुत लोगों ने व्रत, नियम, संयम पूर्वक मुनिवर के प्रवचन सुनते हुए पर्यूषण पर्व मनाया। अन्तिम दिन विमानोत्सव एवं क्षमा वाणी पर्व के दिन भी आपस में भक्तों ने बड़े उल्लास के साथ क्षमावाणी मनायी। फिर ता. 28.09.2001 को मध्यप्रदेश के क्षेत्रों के दर्शन हेतु यात्रा एवं आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराजजी के दर्शन के लिए मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराजजी का पावन प्रेरणा से एक बस निकली थी, जिसमें सब गृहस्थ प्रतिमाधारी लोग भी गये थे। पुदुकामूर आरनी नगर के इस पावन वर्षायोग में प्रति रविवार श्रमण तमिल शास्त्रों की संगोष्ठी भी होती रही। चातुर्मास के बीच में मध्यप्रदेश स्थित दमोह जिले के नगर से मुनिश्री के पूर्व अवस्था के माता-पिता भाई एवं बड़े मामा, मामी के लिए यह चातुर्मास का पहला अवसर था। जिसमें सभी कार्यक्रम मंगलमय हुये। प्रतिदिन के प्रवचन में वहाँ के श्वेताम्बर समाज के लोग भी आते थे। इस चातुर्मास से आजु-बाजु के ग्रामों में भी बहुत धर्म प्रभावना हुई। वर्षायोग के अन्त में ता. 17.11.2001 को कण्ठपाठ प्रतियोगिता की गयी। जिसमें बड़ों के लिए छहढाला, स्वयंभूस्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, रत्नकरण्डक-श्रावकाचार, भक्तामर स्तोत्र, इष्टोपदेश, द्रव्य संग्रह, तिरूकुरल, त्रिरुनुद्रुअन्तादी, सुप्रभात स्तोत्र, महावीराष्टक आदि विषय रखे गये थे। उनको मुखाग्र सुनाकर बहुत लोगों ने लाभ लिया। ता. 18.112001 को पिच्छि परिवर्तन एवं कण्ठपाठ प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम हुआ, जिसमें गुरुवर की पुरानी पिच्छी प्राप्त करने का सौभाग्य श्री राजशेखर दम्पति पुदुकामूर वालों को मिला। तथाहि जिन और भी लोगों ने ब्रह्मचर्य धारण किया था उन श्रावकों के द्वारा मुनिश्री को नयी पिच्छिका प्रदान की गई। चातुर्मास के उपरान्त मुनिसंघ वहाँ से विहार करके मोटूर, कलवै, तिरुपणमूर, वेम्पाक्कम्, कांचीपुरम, तिरुपत्तिकुण्डरम् आदि गाँवों में प्रभावना करते हुये पुनः लौटकर पुदुकामूर (आरनी) आये।

पुदुकामूर में पंचकल्याणकः-

मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में पुदुकामूर (आरनी) में द्विमंजिला अष्टकोण बने नये मन्दिर का ता. 17.02.2002 से 22.02.2002 तक छह दिनों में श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव सम्पन्न हुआ। यह मन्दिर मात्र एक वर्ष में ही बनकर तैय्यार हो गया था। ये सब मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी का आशीर्वाद का ही फल था। इस पंचकल्याणक में मन्दिर की दोनों मंजिल सम्बन्धी मूर्तियाँ एवं अन्य धातु की प्रतिमायें और मोटूर गाँव नवीन जिनालय की सभी प्रतिमायें भी मुनिश्री के कर कमलों से ही प्रतिष्ठित करवाई गई। पं. नन्हें भाई शास्त्री, सागर (म.प्र.) एवं पं.

सिंहचन्द्रजी शास्त्री, मद्रास पंचकल्याणक के निर्देशक थे। कर्नाटक के कल्गोण्डा गाँव से सेवादल भी अपना दिव्यघोष लेकर आया था। उन जैन भव्य युवाओं ने दिव्यघोष के माध्यम से भव्य आयोजन की शोभा बढ़ाते हुए धर्म प्रभावना की, और रात्रि काल में महाआरती, पाठशाला के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विद्वानों के प्रवचन आदि कार्यक्रम चलते रहे। प्रतिदिन दो बार मुनिश्री का तमिल में प्रवचन भी होते रहे। इस प्रकार यह पंचकल्याणक जितना सोच नहीं सकते थे उतना अच्छा हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

मोटूर गाँव में जिनालय एवं बिम्ब प्रतिष्ठाः-

पश्चात् (आरनी) पुदुकामूर से मुनिश्री मोटूर गाँव पहुँचे। वहाँ पर मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में ता. 24.02.2002 को नये निर्मित मन्दिर में पुदुकामूर से प्रतिष्ठित करवा करके लायी गयीं प्रतिमाओं को वेदी में स्थापित (प्रतिष्ठित) किया गया। त्रिदिवसीय भव्य कार्यक्रम में मुनिश्री के प्रवचन भी हुये। पाठशाला के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुये। छोटी-सी समाज होने के बावजूद भी जिन मन्दिर बनाने का भाव एवं पूर्ण साहस किया यह अति प्रशंसनीय बात थी।

वेलूर नगर में मंगल प्रवेशः-

पश्चात् मुनिश्री ससंघ वहाँ से विहार करके अग्रापालयम, कुन्नत्तूर, कोकरम्पट्टु, कन्नमंगलम्, वल्लम, कनियमबाड़ी, नेलवाय, सात्तुमटुरै, चित्तेरी, आदि गावों से होते हुए वेलूर पहुँचे। फिर तोरप्पाड़ी, आफिसर लैन, रिंग रोड, आदि स्थानों से होते हुए सत्तुवाचेरी जिनालय में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। जिनालय के दर्शन करने के बाद मुनिश्री ने मंगल आशीष वचन दिये और मन्दिर की कमेटी द्वारा किये गये नम्र निवेदन पर कुछ दिन प्रवास किया। प्रतिदिन मुनिश्री का मंगल प्रवचन होते रहे। इससे लोगों के अन्दर का मिथ्यात्व अन्धकार नष्ट हुआ, और धर्म के प्रति रुचि जागने लगी। प्रभु का दर्शन, उत्तमरीति से अभिषेक, पूजन, सम्यग्दर्शन पूर्वक स्वाध्याय आदि करने लगे।......

क्रमशः......

करवट लेकर सोने से दूर होगा अल्जाइमर

यदि आप पेट या पीठ के बल सीधा सोने के बजाय तिरछा सोने की आदत डालते हैं, तो अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसे न्यूरोलॉजिकल बीमारियों से बच सकते हैं। अमेरीका की युनिवर्सिटी ऑफ रोचेस्टर के अनुसार सोने की तरीका चुनना या अपनाना आराम करने की एक जैविक क्रिया है, जो जागने के दौरान दिमाग में जमा होने वाले मेटाबॉलिक अपशिष्ट को निकालने के लिहाज से महत्वपूर्ण है

साभार : पत्रिका, (दैनिक समाचार), 30/08/15, भोपाल

मानव-संस्कृति के आदि-पुरस्कर्ता भगवान ऋषभनाथ

डॉ. नेमीचंद जैन

जैन परंपरा के अनुसार ऐसे मानव मनीषी जो मानवता के दीपक की धूमिल-पड़ती-लौ को नई रोशनी प्रदान करते हैं, 'तीर्थंकर' कहलाते हैं। जैन तीर्थंकर कोई दैवी शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति नहीं थे, वे पूर्ण मानव थे, जिन्होंने सांसारिक दु:खों की निवृत्ति के लिए तपश्चर्या की और अपने समकालीन विश्व को मुक्ति का अमर संदेश दिया।

जैन दर्शन के अनुसार यह लोक छह द्रव्यों से बना है, ये हैं- जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। जीव चेतन द्रव्य है, पुद्गल अचेतन है, धर्म गति के माध्यम है, अधर्म स्थिति का माध्यम है, आकाश समस्त द्रव्यों को स्थान प्रदान करता है, और काल परिवर्तनों की खिड़कियों से अपने होने की सूचना देता है। द्रव्य अविनाशीक है। कभी नष्ट नहीं होते। आकृतियाँ बदलती हैं पुद्गल की; किन्तु उसकी मौलिक सत्ता कभी नष्ट नहीं होती। पुद्गल का चरम रूप परमाणु है। जैन दर्शन में परमाणु के स्वरूप पर काफी गहराई से विचार हुआ है।

भगवान आदिनाथ(ऋषभनाथ) कब हुए, यह कहना कठिन है। समय के उस सिरे तक इतिहास की पहुँच नहीं है; हाँ, मोहन जोदड़ो की खुदाई से मिले तथ्यों के आधार पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि आज से लगभग साढ़े पाँच हजार वर्ष पूर्व जो सुविकसित मानव-सभ्यता थी वह भगवान ऋषभनाथ की पूजा करती थी। 'दड़ो' के उत्खनन में भगवान ऋषभ की जो कायोत्सर्ग नग्न मूर्ति मिली है वह उनकी प्राचीनता पर प्रकाश डालती है। प्रागैतिहास, इतिहास और साहित्य से जो प्रमाण मिलते हैं उनसे यह स्पष्ट है कि भगवान ऋषभनाथ परम योगीश्वर थे, ऐसे महामानव जिन्होंने मानव समाज को भोग-की-ओर से योग-की-ओर मोड़ा था।

इतिहास का हाथ जहाँ पहुँच नहीं पाया है, वहाँ कभी योग की संस्कृति अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी और वह खुद मनुष्य को लीलने-निगलने लगी थी। भोग-की-अति विषरूप हो गई थी। वनोपजों से काम चलना मुश्किल हुआ था। कल्पवृक्ष लुप्त होने लगे थे, अर्थात् ऐसी स्थितियाँ नष्ट होने लगी थीं, जिनसे मनुष्य बिना पुरुषार्थ अपना भरण-पोषण कर सके। पूरा मानव समाज एक असूझ अंधे मोड़ पर आ खड़ा हुआ था।

व्यक्तिगत क्लेश और दलगत युद्ध होने लगे थे। लोगों में कर्तव्य और पुरुषार्थ की कोई परिकल्पना नहीं थी, वे किंकर्तव्यविमूढ़ थे। वे नहीं जान पा रहे थे कि इस विषम स्थिति से कैसे पार पाया जाए? भोग से कर्म की ओर छलाँग मारने में उन्हें एक गहन असमंजस का अनुभव हो रहा था।

लोग नहीं जानते थे कि 'बीज' नाम की कोई चीज है। वे बीज से अपरिचित थे। खेती की तो उन्हें कोई कल्पना ही न थी। स्वयंभू वृक्ष उन्हें जो देते थे, उसी से वे अपनी जिंदगी बसर करते थे। कर्म और श्रम की महत्ता का उन्हें किंचित् बोध न था।

आदिपुरुष ऋषभदेव ने जिज्ञासाओं को समझा और उनके संतुलित उत्तर दिए। उत्तर ही नहीं दिए बल्कि मैदान में आकर लोगों को राह दिखाई। उन्हें कुछ जीवनादर्श दिए। उन्हें जीने की कला-सिखाई। उन्हें बताया कि मनुष्य सोच सकता है और अपने चारों ओर विस्तृत परिवेश को समझ सकता है। वह अंधेरे और अज्ञान के बीच रोशनी की कोई राह बना सकता है। वह बलशाली है। उसे हिंसा की राह नहीं चलना है। उसे बर्बरता से बचना है। उसे अहिंसा का राजमार्ग अपनाना है और अपनी सृजनधर्मिता का विकास करना है। भगवान ने कहा: हमारे सामने कृषि और उद्योग धंधों की असंख्य संभावनाएँ हैं। हम यदि चाहें तो दुनिया के जीव जगत के साथ एक मंगलमय सहअस्तित्त्व में रह सकते हैं।

इस तरह उनके द्वारा 'जियो और जीने दो' के मंगल-सूत्र का सूत्रपात हुआ। चारों ओर कुछ ऐसी रचनात्मक संभावनाएँ हाथ जोड़े आ खड़ी हुईं, जिनसे मनुष्य विपथगामी होने से बच गया। हिंसा की ओर बढ़ते उसके कदम रुक गए और वह कृषि के रास्ते पर आ गया। 'शिकार नहीं, काश्त' से अपने उदर-पोषण के लिए वह तैयार हुआ। भगवान ऋषभनाथ ने अपनी समकालीन जनचेतना को समझा और उपयुक्त संस्कार दिया। उसे सौंदर्य और लालित्य का स्पर्श दिया। जीवन के मोटे मूल्यों के साथ-साथ उन्होंने उसके उदात्त और स्थायी मूल्यों की ओर भी अपने समकालीन मनुष्य का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने उसे अक्षर दिए, अंक दिए, कला दी, शिल्प दिए।

इतिहास बहुत साफ नहीं है। जिन्हें जैन समाजशास्त्र में 'कुलकर' कहा गया है, हिंदू समाजशास्त्र में उन्हें 'मनु' कहा गया है। मनु 14 हुए हैं। कुलकर भी 14 हुए हैं। नाभिराज चौदहवें कुलकर थे। वे ऋषभनाथ के पिता थे। उनकी माता का नाम मरुदेवी था। वे अयोध्या में जन्मे। 'अयोध्या' का अर्थ कौन नहीं जानता ? जहाँ युद्ध अर्थहीन हो गया है, वह है अयोध्या, जहाँ जीवन के सर्वोच्च मूल्यों का सूर्योदय हुआ, वह थी अयोध्या।

ऋषभ की दो रानियाँ थीं- सुनंदा और यशस्वती। सुनंदा से भरत और ब्रह्मी आदि तथा यशस्वी से बाहुबली और सुंदरी जन्में। आपके ज्येष्ठ पुत्र भरत ही चक्रवर्ती सम्राट हुए, और इन्हीं भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' पड़ा। ऋषभनाथ की सौ से अधिक संतानें थी। उन्होंने एक सुगठित राज, समाज और नीतितंत्र की रचना की और मानव संस्कृति को अमरता के पथ पर अग्रसर किया।

वैराग्य की ओर कदम उठाने के पहले उन्होंने अपने समकालीन समाज को असि, मसि, कृषि और ऋषि प्रवृत्तियों की ओर प्रेरित किया। ये चारों शब्द प्रतीकात्मक हैं। असि यानि तलवार, मसि यानी स्याही, कृषि यानी काश्त किसानी और ऋषि यानी तप मुक्ति। दूसरे शब्दों में असि राजतंत्र का, मसि अर्थतंत्र का, कृषि प्रजातंत्र का, और ऋषि यानी आत्मतंत्र का प्रतीक शब्द है।

उन्होंने स्पष्ट बताया कि हम लड़ें तो कब ? और न लड़ें तो कब। जो समाज किसी भी समय लड़ने को उद्यत रहा हो उसे एक सुविकसित/ सुचिंतित युद्धशास्त्र देना कितना कठिन था। भगवान ऋषभनाथ ने जहाँ एक ओर एक रचनात्मक रणशास्त्र का प्रवर्त्तन किया, वहीं शांति बनी रहे और प्रजा का अबाध विकास हो उन तौर-तरीकों को भी बताया। उन्होंने बताया कि किस तरह एक व्यक्ति पूरे समाज को अपनी विस्तार लिप्सा के कारण हिंसा की भट्टी में झोंक सकता है। भरत बाहुबली-युद्ध, युद्ध के परिणाम को सीमित करने का सर्वोत्तम संदेश है। यह युद्ध इस समस्या का रचनात्मक समाधान भी है। यदि राजघराने में कोई कलह, या क्लेश हो तो उससे पूरे राज्य या समाज को झुलसने से बचाना चाहिए।

मसि के माध्यम से उन्होंने अक्षर और अंक-विद्याएँ दीं। जिस नारीशक्ति को आज हम पूरा सम्मान नहीं दे पा रहे हैं, भगवान ऋषभनाथ ने उसे पूरा आदर दिया। उन्होंने ब्राह्मी को अठारह लिपियों का ज्ञान दिया और सुंदरी को अंकगणित का। आप ही सोचें कि यदि अक्षर और अंक आदमी के पास आज न होते तो उसका क्या होता ? हम कृतज्ञ हैं उस महामनुज के जिसने हमें ''अ'' दिया और जिसने हमें +, -, ×, ÷ दिए।

कहा जाता है जब ऋषभकुमार गोद में किलक रहे थे तब उन्होंने किसी आगंतुक के हाथ में इक्षु (ईख) देखा और उसकी ओर हाथ बढ़ाया। माना जाता है कि तभी से इस वंश को 'इक्ष्वाकु' कहा जाने लगा। 'बीज' के बीज भी इसी घटना में हैं। तब मनुष्य ने जाना कि बोकर वैपुल्य को पाया जा सकता है। 'एकोऽहम् बहुस्याम्' (मैं एक हूँ, अनेक हो जाऊँ या हो सकता हूँ) के मर्म का बोध भगवान ऋषभनाथ ने दिया। इसी तरह उन्होंने ऋषिचिंतन की परंपरा को भी स्थापित किया। उन्होंने कहा कि शरीर का अंत नहीं है, अंत वस्तुत: है ही नहीं। अंत यदि है तो सिर्फ आकृतियों का है, आकृत का कोई अंत नहीं है। आकृत अमर है। इस तरह से उन्होंने अध्यात्म की परम गौरवशालिनी परंपरा को प्रवर्तित किया।

वर्ण परंपरा भी उन्हीं की ही दी हुई है। उन्होंने सबसे पहले समाज-रक्षा की ओर ध्यान दिया। रक्षा के लिए क्षत्रिय वर्ग बना। व्यापार के लिए वैश्य और अध्ययन-अध्यापन के लिए द्विज। स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए शूद्रों का एक समूह बनाया गया। अंतिम वर्ग स्वास्थ्य विज्ञानियों और वास्तु

शिल्पियों का एक महत्वपूर्ण वर्ग स्वेच्छया बने थे। सबने अपने-अपने काम अपनी-अपनी रुचि और इच्छा से चुने थे। किसी पर कोई जोर जबर्दस्ती नहीं थी। इस तरह एक बया जिस तरह अपना घोसला बुनता है, उस तरह बुने हुए सुगठित समाज का आविर्भाव हुआ। एक सुविचारित दंडनीति भी अस्तित्व में आई। दंड के तीन प्रकार थे- छोटे अपराधों के लिए 'हा-कार', मझौले अपराधों के लिए 'मा-कार' और निकृष्ट अपराधों के लिए 'धिक्कार'। पहले प्रकार में 'हा' कह कर पश्चाताप करना होता था, दूसरे में 'मा' कहकर अपराधी को चेतावनी दी जाती थी, और तीसरे में उसका सार्वजनिक तिरस्कार किया जाता था। दंड के ये प्रकार जुर्म की तीव्रता पर निर्भर करते थे।

जैन साहित्य में जो सूचनाएँ प्राप्त हैं उनके अनुसार भगवान ऋषभनाथ के चतु:संघ में 84,000 साधु और 3,50,000 साध्वियाँ थीं। इसी तरह उनके संघ में 3,00,000 श्रावक और 5,00,000 श्राविकाएँ भी थीं।

ऐलक श्री 105 महानसागरजी का परिचय

पूर्व नाम	:	महावीर जैन
जन्म तिथि	:	27-07-1978
माता का नाम	:	देव अम्मा
पिता का नाम	:	चांदिया
जन्म स्थल	:	कंदरोली (कर्नाटक)
तहसील	:	सागर
जिला	:	शिवमोगा
ब्रह्मचर्य व्रत	:	1999
सात प्रतिमा	:	2001, अमरकंटक, आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज
ऐलक दीक्षा	:	02/08/2015, रविवार, तारंगाजी (गुजरात)
दीक्षा गुरु	:	आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज
अभ्यास	:	12 वीं (हाई स्कूल)

10 वर्ष मुनिश्री नियमसागरजी महाराज के पास धर्मध्यान किया।

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 48 वाँ दीक्षा दिवस समारोह

संजय जैन, देवरी समाचार

आज से 47 वर्ष पूर्व आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ने मुनि दीक्षा देकर मेरे ऊपर उपकार किया था। जिस तरह देश में आजादी के नाम 15 अगस्त की तरीख है। वहीं मुझे मुनि दीक्षा देकर सांसारिक जीवन से आजाद कर दिया। ये शब्द संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने 48वें दीक्षा दिवस समारोह पर बीना बारहा में एक धर्मसभा में कहे। आचार्यश्री ने कहा कि मेरे गुरुजी ने मोक्ष मार्ग का रास्ता प्रशस्त किया। दीक्षा होने पर मोक्ष दूर नहीं रहता है। दीक्षा लेने पर स्वतंत्रता आती है। जब स्वतंत्रता आती है तो गणतंत्र दिवस भी अपने आप आ जाएगा। हमें 15 अगस्त 'आजादी' मिल गया है। आप सबको भी मिल जाए। आचार्यश्री अपने भाइयों को गृहस्थ जीवन में रत्नत्रय के माध्यम से समझाते थे। बीना बारहा में आज 48वें मुनि दीक्षा समारोह के दौरान आचार्यश्री के गृहस्थ जीवन की दोनों बहनें वर्तमान में ब्रह्मचारिणी दीदियाँ स्वर्णा दीदी और शांता दीदी ने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि जब आचार्यश्री की उम्र 6-7 वर्ष थी उस समय उनसे छोटे भाई शांतिनाथ; वर्तमान में मुनिश्री समयसागर महाराज जब रोते थे तो उनकी माँ कहती थी कि पीलू शांतिनाथ को बाहर ले जाओ और चुप कराओ तो आचार्यश्री उस समय अपने भाई से कहते थे कि रो मत, रोने से पाप पड़ता है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र को धारण करो, तो शांतिनाथ चुप हो जाते थे। आचार्यश्री बचपन से ही धार्मिक भाव लेकर वैराग्य के भाव से लेकर वैराग्य की इच्छा के साथ अपना समय व्यतीत करते थे। 9 वर्ष की उम्र में ही उनमें वैराग्य के भाव दिखने लगे थे। आचार्यश्री के दीक्षा दिवस पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री योगसागर महाराज ने कहा कि आचार्यश्री वैराग्य के भाव से लेकर आचार्य पद आज तक उनको काफी करीब से देखा है। उनके संस्मरणों का व्याख्यान शब्दों में संभव नहीं है। इस संसार में निर्भीक अगर कोई है तो वह वैराग्य है। मुनिश्री शाश्वतसागर महाराज ने कहा कि जिसने संयम को धारण किया वही पूज्य है। सारा देश इसलिये दु:खी है क्योंकि सप्त व्यसन में लीन है, लेकिन जो व्यसनों से मुक्त एवं संयमी है, वह प्रसन्न है। मुनिश्री शीतलसागर महाराज ने कहा कि हमने कभी नहीं सोचा कि गुरुजी के सामने दीक्षा दिवस मनाने का अवसर मिलेगा। स्तुति शब्द के माध्यम से गुरु शब्द की व्याख्या की। स्तुति का मतलब गुणों का वर्णन करना है, लेकिन जो गुणों से भरपूर है उनके लिए स्तुति शब्द भी कम है। ऐसे आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज हैं, जो गुणों से भरपूर हैं। पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य प्रभात जैन मुंबई, संतोष जैन अनंतपुरा, अशोक जैन ठेकेदार, बंडा को संयुक्त रूप से प्राप्त हुआ।

आहारचर्या सुरेन्द्र सोधिया, राजेश सोधिया महाराजपुर वालों के चौके में हुई। श्री सोधिया ने शांतिधारा दुग्ध योजना के अंतर्गत 5 गाय दान देने की घोषणा की। बालाघाट की श्रीमती ज्योति दीपक जैन ने आचार्यश्री के हस्तनिर्मित छायाचित्रों की प्रदर्शनी लगाई। जिसमें आचार्यश्री के जन्म से लेकर वैराग्य तक और विद्याधर से विद्यासागर तक के समस्त चित्रों को लगाया गया। जिसकी खूब सराहना हुई।

संस्मरण: आचार्यश्री अंतरयामी हैं: मुनिश्री श्रमण सागर महाराज ने कहा कि मैंने कभी नहीं सोचा कि मेरी मुनि दीक्षा होगी। परंतु मैं हमेशा यह सोचता था कि अगर मेरी मुनि दीक्षा हुई तो मेरा नाम श्रमणसागर रखा जाए। लेकिन आचार्यश्री के समक्ष कभी अपनी बात नहीं रख पाया। जिस दिन मेरी दीक्षा हुई और नामकरण हुआ। जैसे ही मेरा मुनि बनने के बाद नामकरण श्रमण सागर के रूप में हुआ तो मैं स्तब्ध रह गया। कानों पर विश्वास नहीं हुआ। आज मैं आप सबको बताना चाहता हूँ कि गुरुजी अंतरयामी हैं। इसमें कोई शक नहीं है। मुनिश्री निस्सीम सागर ने मुनि दीक्षा दिवस समारोह कार्यक्रम का संचालन किया।

क्षुल्लकश्री 105 भाग्यसागरजी महाराज का परिचय

नाम	:	भूपेन्द्रभाई अमृतलाल मेहता
जन्म तिथि	:	29-03-1951
माता का नाम	:	श्रीमती मंजु बेन
पिता का नाम	:	श्री अमृतलाल मेहता
जन्म स्थल	:	वलासजा, ता- खेरालु, जि- महेसाणा (गुजरात)
ब्रह्मचर्य व्रत	:	26/07/2014
सात प्रतिमा	:	26/11/2014, हरदा (म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा	:	02/08/2015, रविवार, तारंगाजी (गुजरात)
दीक्षा गुरु	:	आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज
दीक्षा स्थल	:	तारंगाजी (गुजरात)
अभ्यास	:	10वीं

2- वर्ष से आचार्यश्री आजर्वसागरजी के पास धर्मध्यान किया।

परिशुद्ध वस्तु चा मोठा उपकार (मराठी भाषा में)

–मुनिश्री आर्जवसागरजी

त्रिफला आहे मानवाची श्रेष्ठ औषधी
सगळ्याना बनविते निरोगी ही औषधि
पंच परमेष्ठी हेच आम्हाला श्रेष्ठ औषिधि
जन्म मरण लवकर दूर करते ही औषधि।

पायरी ही आम्हाला फार उपकारी
महलावर नेऊन ठेवते ही पायरी
सम्यग्दर्शन हेच आम्हाला श्रेष्ठ पायरी
मोक्षमार्ग, मोक्ष शुद्धा देते ही पायरी।

चिन्तामणी आहे मोठा रतन
मिळतो ज्यावेळी, त्यावेळी नाही पतन
वीतराग भगवान हेच आम्हाला चिन्तामणीरतन
ज्यावेळी मिलते त्यावेळी होय मोक्ष जतन।

पारसमणी आहे जगतला मोठामणी
लोखण्डाचे सोने करतो हा सुंदरमणी
अरिहंत भगवान हेच आम्हाला पारसमणी
ज्यावेळी मिळतो त्यावेळी होतो धर्म शिरोमणी।

हे भव्य! जरा ऐका, ही वस्तु मला पाहिजे ।
ज्या वस्तु परिशुद्ध आहे, त्या द्वारे मोक्ष पाहिजे ।।

गुजरात शान छे महान छे (गुजराती भाषा में)

-मुनिश्री आर्जवसागरजी

गुजरात मां सौराष्ट्र नी शान छे।
गिरनार दर्शन खूबज गुणवान छे।
शत्रुंजय पर्वत आमिनार छे
गुजरात मां सौराष्ट्र नी शान छे
पावागढ़ जिनयात्रा पापनी हान छे
तारंगानुं लागे आत्म-ध्यान छे
गुजरात मां सौराष्ट्र नी शान छे।
गुजरात श्रावक खूबज सरलमान छे
पाठशाला मां भुलकानुं संस्कार महान छे
गुजरात मां सौराष्ट्र नी शान छे।
धर्म ध्यान माटे गुजरात प्रकृति खूबज शान छे
जैन श्रावक श्रद्धा मां सदा गुरु भगवान छे
गुजरात मां सौराष्ट्र नी शान छे।
पूर्व पुण्य नो आपो मोक्ष पथ नो ज्ञान छे
सूरत श्रावक नो जिन दर्शन गुरु आशी प्राण छे।
गुजरात मां सौराष्ट्र नी शान छे।

पावागिरि (ऊन), फरवरी-2014

धर्मद कडेगे बन्नि (कन्नड़ भाषा में)

-मुनिश्री आर्जवसागरजी

धर्मद कडेगे बन्नि बन्नि भव्य आत्मा।
पुण्य बंध कर्म क्षय माडि आत्मा।
नर जन्मव सार्थक माडिकोळ्ि आत्मा।
मोक्ष-मार्ग धारणे माडि आत्मा ॥ 1॥

यल्लि हिंसे इदेयो अल्लि सुखविल्ल।
यल्लि अहिंसे इदेयो अल्लि दुःखविल्ल।
पापगळन्नु त्याग माडि आत्मा।
व्रत पालने माडि, मोक्ष पडेयि आत्मा ॥ 2॥

मिथ्यात्व नम्म शत्रुवागिदे नोडि आत्मा।
सम्यक्त्व नम्म मित्रवागिदे तिळियि आत्मा।
सम्यक्त्व वन्नु चन्नागि पालनेमाडि आत्मा।
सुगतिय कडेगे बेगने होगि आत्मा ॥ 3॥

रागद देवतेगळु पुण्य कोडुवुदिल्ल।
याके? अल्लि पापगळ त्यागविल्ल।
रागद देवर पूजेयन्नु बिडि आत्मा।
दुर्गति आवाग इल्ल आत्मा ॥ 4॥

पापगळु यल्लि इल्लवो, अशुभ भाव गळल्लिवो।
अल्लि इवे पुण्यगळु, संदेहवु इल्लवो।
वीतराग पूजे, अर्चने माडि आत्मा।
सातिशय पुण्यबंध माडिकोळ्ळि आत्मा ॥ 5॥

दान, पूजे, शील गळल्लि, धर्मविदे आत्मा।
सद्धर्मद पालने माडि आत्मा।
ओन्दु दिवस नीवु आगुवि भव्य श्रेष्ठ आत्मा।
परमेष्ठियागि सिद्धगतिगे होगि आत्मा ॥ 6॥

अहिंसात्मक तरीके से मनायें दीपावली

जैन धर्म दुनिया को अहिंसा का संदेश देता है। सन् 2015 की दीवाली पर संकल्प लें कि पटाखा नहीं चलायेंगे क्योंकि प्रति वर्ष 2000 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान होता है। आस्ट्रेलिया,कनाडा, हांगकांग, मलेशिया, इंडोनेशिया, इटली, फिलीपींस, स्वीडन में पटाखों पर प्रतिबंध है। पटाखों से निकलने वाले कार्बन, सल्फर और नाइट्रोजन के जहरीले ऑक्साईड समस्या बने हुये हैं, जो आँखों एवं फेफड़ों की बीमारियों की वजह हैं। पटाखों से बचे पैसे के सदुपयोग से किसी गरीबघर को रोशन कर सकते हैं। दवाई आदि देकर, एवं जिनके पति नहीं हैं, पत्नी नहीं है, बच्चे नहीं है या अन्य समस्या हैं उनकों हम खुशियाँ दे सकते हैं। (संदर्भ: दैनिक भास्कर 12.11.2012)

पटाखे फोड़ना निम्नानुसार नुकसानदायक है:-

1. वायु प्रदूषण
2. स्वास्थ्य हानि
3. गंदगी ही गंदगी
4. अनंत पाप का बंध
5. निर्दोष जीवों का घात
6. दो लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष अपंग
7. 2000 करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान प्रतिवर्ष
8. 700000 लोगों की आँखों को नुकसान प्रतिवर्ष
9. कर्मचारियों की मृत्यु पटाखा फैक्ट्री में प्रतिवर्ष
10. थोड़े से मनोरंजन के लिये अनंत जीवों की हत्या क्यों ?
11. हमें तो अग्नि की आँच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं। छोटी सी आवाज से हमारे बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत जीवों को मौत के घाट उतरते देखकर हमारे हाथ क्यों नहीं कांपते ? डॉ. कहते हैं कि पटाखों की तेज आवाज से स्थायी रूप से बहरापन, कान का पर्दा फटना या स्मरण शक्ति का कम होना जैसी समस्यायें आ सकती हैं।
12. पटाखे जलाने के बाद धुंआ व तेज रोशनी कार्निया को जला सकती है।
13. पटाखों की चिंगारी व धुएं से अल्सर व कैटेटाइटिस का खतरा बना रहता है।
14. सामान्य से अधिक आवाज दिमाग की क्षमता को 30 प्रतिशत कम कर देती है।
15. बारूद के धुएं से एलर्जी, अस्थमा अटैक, तेज धमाके से हृदयघात का खतरा बढ़ जाता है तथा फेफड़े के रोगियों की परेशानी बढ़ती है।
16. बारूद के धुएं से प्रदूषण बढ़ता है। 75 से 80 डेसीबल से अधिक ध्वनि प्रदूषण की श्रेणी में आती है।

(मार्गदर्शन/प्रेरणा दिगम्बर जैन मुनि)

प्रस्तुति अभिषेक चौधरी, नागपुर(महा.) मो. 09422126415 ई-मेलः rajauniform@gmail.com

सूतक-पातक समाधान (चार्ट)

अवसर	जन्म	मरण	विशेष
3 पीढ़ी तक	10 दिन	12 दिन	-
4 पीढ़ी में	10 दिन	10 दिन	-
5 पीढ़ी में	6 दिन	6 दिन	-
6 पीढ़ी में	4 दिन	4 दिन	-
7 पीढ़ी में	3 दिन	3 दिन	-
8 पीढ़ी में	8 पहर (1 दिन-रात)	8 पहर (1 दिन-रात)	-
9 पीढ़ी में	2 पहर-(6 घंटा)	2 पहर-(6 घंटा)	-
10 पीढ़ी में	स्नान करने तक	स्नान करने तक	स्नान करने तक
पुत्री एवं अन्य रिश्तेदार (निज घर में)	3 दिन	3 दिन	घर से बाहर हो, तो नहीं लगेगा
अन्य व्यक्ति, दासी, दास एवं पालतू जानवर (निज घर में)	1 दिन	1 दिन	घर से बाहर हो, तो नहीं लगेगा
गृह त्यागी, सन्यासी, संग्राम में	-	1 दिन	-
गोत्री अन्य स्थान पर (विदेश में)	खबर आने के पीछे शेष दिनों में	खबर आने के पीछे शेष दिनों में	-
गर्भस्राव होने पर (तीन माह तक)	-	जितने माह का हो माता को उतने दिन	परिवारजनों को नहीं लगेगा परिवारजनों को
गर्भपात होने पर (4 माह से 6 माह तक)	-	जितने माह का हो माता को उतने दिन	एक दिन का परिवारजनों 3 दिन
मरा हुआ बालक जन्में या नाल छेदने के पश्चात् मर जावे तो	-	माता को 45 दिन	परिवारजनों को 5 दिन
जीवित बालक उत्पन्न हो नाल छेदने के पश्चात् मर जावे	-	माता-पिता को 45 दिन	अन्य तीन पीढ़ी
तीन वर्ष के बालक का मरण होने पर	-	परिवार को 10 दिन	तक 5 दिन अन्य पीढ़ी को उपर्युक्तानुसार
आठ वर्ष के बालक मरण होने पर	-	तीन पीढ़ी तक 10 दिन	प्रायश्चित ही शुद्ध होंगे चार दिन पश्चात शुद्ध होती है
अपघात मृत्यु-गर्भपात कराने पर	-	छः माह	
रजस्वला स्त्री	-	-	जीवन पर्यन्त
अनाचारी स्त्री-पुरुष को	जीवन पर्यन्त	जीवन पर्यन्त	

(साभार: प्रतिष्ठा पराग पृष्ठ 209 से 212 तक)

अन्य जगह और भी मत मिलते हैं।

चौथी पीढ़ी में 6 दिन, पाँचवी पीढ़ी, छठी पीढ़ी तक 4 दिन, नवमी पीढ़ी में स्नान मात्र, तीन दिन के बालक का मरण होने पर 1 दिन (माता-पिता का 10 दिन, पूजन-पाठ प्रदीप में), आठ वर्ष के बालक का मरण होने पर 3 दिन का पातक लगता है। (जिन भारती संग्रह)

पुण्यार्जक:- रीतेश जैन, निखिल जैन रायपुर (मो.) 9301616785

नोट:- यह जानकारी मंदिर, धर्मशाला, सार्वजनिक स्थान, घर आदि के मुख्य स्थान पर लगा दें।

सूतक-पातक में पीढ़ियाँ ऐसे गिने

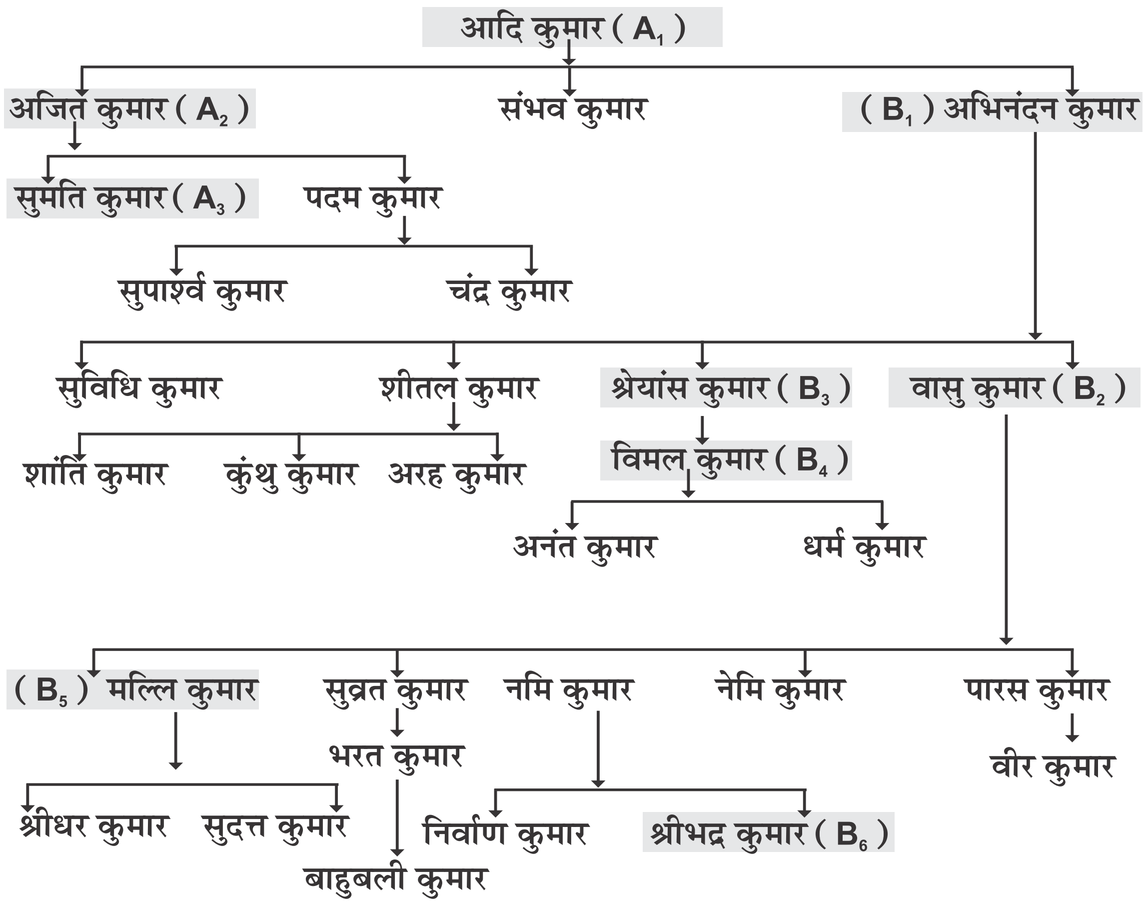

सूतक-पातक के सन्दर्भ में कई क्षेत्रीय परम्पराएँ प्रचलित हैं, पीढ़ी के निर्धारण में भी विभिन्न मान्यताएँ हैं। वरिष्ठ आचार्यों/ मुनिराजों एवं विद्वानों से विचार विमर्श अनुसार यदि एक ही दादा जी के पुत्र एवं पौत्र की पीढ़ी में सूतक पातक है तो उन्हीं से पीढ़ी ली जावेगी यदि दादा जी के चचेरे भईयों की पीढ़ी में सूतससक-पातक होता है तो दादाजी के पिता जी से पीढ़ी ली जावेगी।

1. पीढ़ी की गिनती के लिए यदि अजित कुमार जी (A_2) के पुत्र सुमति कुमार जी (A_3) के यहाँ सूतक-पातक की स्थिति बनती है और वासु कुमार जी (B_2) के पुत्र मल्लि कुमार जी (B_5) के परिवार में सूतक-पातक की गणना करनी हो तो गणना आदि कुमार जी (A_1) से की जायेगी।
2. यदि सूतक-पातक श्रेयांस कुमार जी (B_3) के पुत्र विमल कुमार जी (B_4) के यहाँ होता है और उसकी गणना मल्लि कुमार जी (B_5) के परिवार में करनी है तो गणना अभिनंदन कुमार जी (B_1) से होगी।
3. यदि मल्लि कुमार जी (B_5) के यहाँ सूतक-पातक की स्थिति है और श्री भद्र कुमार जी (B_6) के परिवार में सूतक-पातक की स्थिति की गणना करनी है तो वासु कुमार जी (B_2) से की जायेगी।

(साभार: प्रतिष्ठा पराग पृष्ठ 209 से 212 तक) (मूल प्रति के नाम परिवर्तित किये गये हैं सुविधा के लिए)

ग्रीष्म कालीन प्रवास व सि.क्षे. तारंगा की ओर विहार

परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के म.प्र. के बीड़ नगर में महावीर जयन्ती पर्व एवं गुरुवर का दीक्षा दिवस हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होने के उपरान्त गुरुवर ने वहाँ से खण्डवा नगर की ओर विहार किया। खण्डवा नगर के घासपुरा महावीर मंदिर में आचार्य गुरुवर की भक्ति भाव से मंगल आगवानी की गयी। पश्चात् यहाँ पाँच दिन के वास्तव्य में विशेष प्रवचन एवं पाठशाला के माध्यम से धर्म प्रभावना की तदुपरान्त वहाँ से 5 कि.मी. पर स्थित बोरगाँव अतिशय क्षेत्र गये। वहाँ पर भूगर्भ से प्राप्त भ. आदिनाथ के दर्शनों के बाद भक्तामर विधान, प्रवचन आदि हुए। पश्चात् भीकनगाँव की ओर विहार कर दिया।

भीकनगाँव में स्थित महावीर मन्दिर कमेटी के लोगों ने आचार्य गुरुवर की ग्रीष्म कालीन प्रवास हेतु एवं अक्षय तृतीया पर्व यहीं पर मनाने के लिए नम्र निवेदन किया और प्रतिदिन प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। पश्चात् अक्षय तृतीया पर्व भी मनाया गया। धर्मात्मा कमल झांझरी की माता श्री मनोरमा झांझरी ने मई 2015 के प्रथम सप्ताह में आचार्यश्री आर्जवसागरजी से अणुव्रत धारण किये। पश्चात् वहाँ से बहुत गर्मी में भी विहार करके आचार्यश्री का खरगोन की कमेटी द्वारा निवेदन किये जाने पर खरगोन नगर में प्रवेश हुआ। वहाँ टैगोर पार्क के नये मन्दिर में विराजित जिनबिम्बों का दर्शन किया। पश्चात् वहाँ पर कुछ दिन ठहरकर धर्म प्रभावना की। यहाँ पर सिद्धक्षेत्र तारंगा कमेटी के लोगों ने तारंगा में चातुर्मास हो इस भावना से आचार्यश्री के चरणों में नम्र निवेदन किया। पश्चात् 9 जून को विहार के लिए पूरी व्यवस्था सि.क्षे. तारंगा से आ गई और बड़ी प्रभावना के साथ आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी खरगोन से धामनोद की ओर विहार किया। साथ में सूरत वाले थे। भावन्दी आदि होते हुए खलघाट पहुँचे। बीच में धामनोद कमेटी के लोगों ने आकर आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित किये। पश्चात् धामनोद में मंगल प्रवेश हुआ।

वहाँ पर प्रवचन आदि के माध्यम से प्रभावना की। पश्चात् अतिशय क्षेत्र कागदीपुरा वालों के पूर्व निवेदन से आचार्यश्री ने कागदीपुरा क्षेत्र की ओर विहार किया। यहाँ पहुँच कर भूगर्भ से प्राप्त अतिशयकारी महावीर भगवान का दर्शन किया और प्रवचनादि हुआ। तदुपरान्त कमेटी द्वारा ठहरने का अति आग्रह किये जाने पर भी वहाँ से विहार करके धार वालों के नम्र निवेदन से धार पहुँचे। शाम को नगर में प्रवेश हुआ नगर में स्थित मन्दिर का दर्शन करके सुबह मानतुंग गिरि गये। वहाँ आचार्यश्री की आगवानी के लिए वहाँ पूर्व से स्थित क्षुल्लिका चन्द्रमति माताजी आयी और क्षेत्र पर पहुँचकर वन्दनादि करने के उपरान्त प्रवचन आदि कार्यक्रम हुए। ठहरने हेतु अति आग्रह किये जाने पर भी दोपहर में आचार्यश्री का मंगल विहार झाबुआ की ओर हुआ। झाबुआ के समाज वालों ने आचार्यश्री के चरण

कमल में श्रीफल अर्पित कर अपने नगर में प्रवास करने हेतु नम्र निवेदन किया। तदुपरान्त झाबुआ में आचार्यश्री का मंगल प्रवेश हुआ और प्रवचनादि कार्यक्रम हुये।

गुजरात प्रदेश में मंगल पदार्पण

तदुपरान्त वहाँ से गुजरात की ओर मंगल विहार हुआ। गुजरात प्रदेश के प्रवेश गेट पर गुजरात के सूरत व दाहोद के लोगों ने मंगल कलश लेकर प्रदिक्षणा दे कर पाद प्रक्षालन एवं आरती किया और श्रीफल आदि भेंटकर प्रथम मंगल किया। पश्चात् दाहोद समाज वालों ने आचार्यश्री को अपने नगर में पधारने हेतु नम्र निवेदन किया और दाहोद नगर में आचार्यश्री की मंगल भव्य आगवानी हुयी। दाहोद के भ. पद्मप्रभु आदि मन्दिरों का दर्शन कर धर्मशाला में प्रवचन दिये और शाम को गुरु भक्ति पूर्वक पाठशाला आरती आदि हुई तथा दूसरे दिन प्रात: प्रवचन हुआ और सभी कमेटी, समाज के लोगों ने मिलकर उत्साह पूर्वक आचार्यश्री को चातुर्मास हेतु नम्र निवेदन किया। दोपहर में भी प्रवचन हुये उसमें भावविज्ञान पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन किया गया। सूरत से भी बहुत लोग आये हुये थे।

तदुपरान्त संतरामपुर की ओर विहार हो गया और फिर संतरामपुर पहुँचे। वहाँ पर भी प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। वहाँ भी समाज के लोगों ने चातुर्मास के लिए निवेदन किया। पश्चात् वहाँ से विहार हो गया और बीच में जुलाई 11 तारीख को सभी तारंगा कमेटी के 40-50 लोगों ने तीसरी बार आकर आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी के चरण कमल में श्रीफल अर्पित कर सि.क्षे. तारंगा में चातुर्मास के लिए एवं सिद्धचक्र विधान सम्पन्न हेतु नम्र निवेदन किया। पश्चात् वहाँ विहार करते हुए जादर, वलासाणा, चाड़ा, हडोल आदि गाँव से होते हुए सि.क्षे. तारंगा के तलहटी में स्थित विद्यासागर तपोवन पहुँचे वहाँ आहार चर्या व प्रवचन के साथ एक दिन वास्तव्य किया।

सिद्ध क्षेत्र तारंगा जी में मंगल प्रवेश वा सिद्धचक्र महामण्डल विधान

दिनांक 19 जुलाई 2015 को अरावली पर्वत मालाओं से आवेष्ठित सायरदत्त, वरदत्त वरांग केवली भगवंतों सहित साढ़े तीन करोड़ मुनिराजों की निर्वाण भूमि सिद्धक्षेत्र तारंगा जी में संत शिरोमणी महाचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित अध्यात्म योगी, वात्सल्य मूर्ति, धर्मप्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश बैंड-बाजे, जयकारों और हर्षोल्लास के साथ कमेटी एवं समाज के लोगों ने बड़ी संख्या में उपस्थित हो कर सम्पन्न करवाया। मन्दिरों का दर्शन कर हाल में प्रवचन हुआ और आषाढ़ अष्टान्हिका पर्व में 24/07/2015 से 01/08/2015 तक सिद्धसचक्र महामण्डल विधान पं. चन्द्रप्रकाश 'चन्दर' ग्वालियर वालों के निर्देशन में और आचार्यश्री आर्जवसागर जी के सान्निध्य एवं आशीर्वाद से सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें 24 तारीख को घटयात्रा, सकलीकरण पूर्वक प्रतिदिन जिनाभिषेक, शान्तिधारा, नित्यपूजन पश्चात्

आचार्यश्री का प्रवचन और मण्डल विधान की पूजन आदि कार्यक्रम हुये। बहुत लोगों ने इस विधान सौधर्म इन्द्रादि पात्र बनकर सिद्ध प्रभु की अर्चना कर के सातिशय पुण्य का अर्जन किया और ता. 31/07/2015 को गुरुपूर्णिमा मनाई तदुपरान्त ता. 01/08/2015 को वीर शासन जयन्ती एवं जिनाभिषेक, पूजन, हवन आदि के उपरान्त श्रीजी का विमानोत्सव, सम्मान, आचार्यश्री के प्रवचन आदि कार्यक्रम हुए तथा दोपहर में दीक्षार्थियों ब्र. महावीर भैया कर्नाटक एवं ब्र. भूपेन्द्र भैया सूरत का गोद भराई का कार्यक्रम हुआ और आचार्यश्री का प्रवचन भी हुये।

वर्षायोग स्थापना जैनेश्वरी दीक्षाएँ

तदुपरान्त ता. 02/08/2015 शनिवार को दीक्षा समारोह एवं वर्षायोग कलश स्थापना का कार्यक्रम अपार जन समूह के बीच सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें सुबह दीक्षार्थियों ने केशलोंच किया। तदुपरान्त देवदर्शन व भक्ति पूर्वक दीक्षार्थियों की भव्य शोभायात्रा निकली। पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का पण्डाल में आगमन हुआ। नये उपकरण(पिच्छि, कमण्डल) लाये गये। और प्रथम दृश्य रूप से महेसाणा की बहिनों द्वारा संगीतमय मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इस कार्यक्रम का मंच संचालन पं. अरविन्द जैन रायगढ़ वालों ने किया। पश्चात् दीक्षार्थियों ने आचार्यश्री से दीक्षा के लिए निवेदन किया और सबसे क्षमा माँगी। तदुपरान्त दीक्षा की क्रिया प्रारम्भ हुई। चतुर्गति निवारण हेतु स्वस्तिक चौक पुराया गया और चौकी पर दीक्षार्थियों को बिठाया गया। तदुपरान्त गुरुवर आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने इन दीक्षार्थियों पर मंत्र और भक्तियों आदि का उच्चारण करते हुए दीक्षा की क्रिया की। पश्चात् दीक्षार्थियों ने राग-युक्त वस्त्राभूषण त्याग दिये। ब्र. महावीर भैया, कर्नाटक वालों को ऐलक दीक्षा दी गई, ब्र. भूपेन्द्र भैय्या, सूरत वालों को क्षुल्लक दीक्षा दी गई और पिच्छि, कमण्डल, शास्त्र ये उपकरण उनको गुरुवर द्वारा प्रदान किये गये और ऐलक जी नाम 'महानसागर' रखा गया तथा क्षुल्लक जी नाम 'भाग्यसागर' रखा गया। सब लोग हर्ष विभोर हो गये। वैराग्य का दृश्य देखकर जयकार करते हुए खुशी के अश्रुपात करते हुए सब आनन्दित हो गये। दोनों नव दीक्षित महाराजों के निमित्त कमण्डल और शास्त्र आदि बोलियों द्वारा समाज द्वारा भेंट किये गये थे। पश्चात् दीक्षार्थियों का परिचय दिया गया।

तदुपरान्त द्वितीय दृश्य में सूरत की बहिन द्वारा मंगलाचरण हुआ। पश्चात् तारंगा कमेटी के लोगों द्वारा आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी के चित्र आवरण किया गया। पश्चात् अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तदुपरान्त आचार्य गुरुदेव आर्जवसागरजी के पाद प्रक्षालन की एवं आरती का सौभाग्य श्री लोकेश जैन, दिल्ली परिवार को मिला। शास्त्र भेंट का सौभाग्य रमेश भाई जोईता लाल मेहता परिवार अहमदाबाद एवं गुणवन्तीबेन बी. मेहता परिवार सूरत को मिला। पश्चात् बाहर से पधारे तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान दिल्ली और सूरत मुंबई, ईडर, हिम्मत नगर, गांधी

नगर, अहमदाबाद, महेसाणा, तलोद, कलोल और आजू-बाजू गाँव से बहुत से लोग इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे। इन सब का सम्मान तारंगा की कमेटी ने किया। पश्चात् बोलियों द्वारा पाँच कलश रखे गये। उसमें प्रथम कलश 'रत्नत्रय कलश' का सौभाग्य श्री हर्षद भाई मेहता सूरत वालों को मिला और द्वितीय कलश 'अतिथि सत्कार' कलश का सौभाग्य श्री रमेश भाई जोइतालाल मेहता परिवार अहमदाबाद वालों को तथा तृतीय कलश 'धर्म प्रभावना कलश' का सौभाग्य श्री गुणवंती बेन बी. मेहता परिवार सूरत, वर्षा बेन आर. मेहता परिवार मस्कन वलासणा वालों को और चतुर्थ कलश 'पर्व कलश' का सौभाग्य श्री रमेशचंद कोदर लाल दोशी मुंबई परिवार वालों को और पंचम कलश 'वात्सल्य कलश' का सौभाग्य श्री गांधी नेमचंद स्वचंद परिवार सूरत (तालोद) वालों प्राप्त हुआ मोक्ष सप्तमी पर्व के पुण्यार्जक श्री विनोद भाई अमृतलाल वखारिया कलोल वाले तथा महापर्व सोलहकारण पर्व के पुण्यार्जक श्री नीलाबेन सुरेश भाई गांधी सूरत (दाँता) वाले और दशलक्षण पर्व के पुण्यार्जक श्री ज्योत्सना बेन महेन्द्र कुमार मेहता मुंबई वाले बने थे।

तदुपरान्त तृतीय दृश्य में ससंघ व्रती बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। पश्चात् कमेटी के लोगों ने आचार्यश्री के चरणों में चातुर्मास स्थापना के लिए नम्र निवेदन किया गया। पश्चात् ऐलकश्री महानसागरजी का उद्‌बोधन हुआ। तदुपरान्त अध्यात्म योगी धर्मप्रभावक आचार्यश्री आर्जवसागर जी का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने तारंगा क्षेत्र की महिमा पूर्वक वैराग्य की महिमा बतलाते हुए गुरु और शिष्य का महत्त्व मिट्टी और कुम्भकार के उदाहरण के माध्यम से दर्शाया। पश्चात् आचार्यश्री ने चातुर्मास प्रतिष्ठापन की पंक्तियाँ पढ़ी। पश्चात् मंत्र उच्चारण के साथ पाँचों कलश स्थापित किये गये। इस प्रकार ये सभी कार्यक्रम सिद्धक्षेत्र तारंगा की पावन धरा पर सानन्द सम्पन्न हुये।

भव्य दीक्षा समारोह सम्पन्न

सिद्ध क्षेत्र तारंगा दि. जैन तारंगा क्षेत्र कोठी के मंत्री हसमुख दोशी ने बतलाया कि यहाँ रक्षाबंधन पर्व के दिन आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज एवं उनके शिष्य ऐलक श्री 105 महान जी महाराज व क्षुल्लकश्री 105 भाग्यसागर जी महाराज के सान्निध्य में भिण्ड निवासी कोल्हापुर प्रवासी (इंजीनियर) ब्रह्मचारी श्री नरेन्द्र जैन की ऐलक महाराज के पद की दीक्षा बड़ी प्रभावना के साथ सम्पन्न हुई। सबसे पहले प्रातःकाल में रक्षाबंधन पर्व पूजन निर्वाण लाडू के कार्यक्रम सम्पन्न होने के उपरान्त दीक्षार्थी की विनोली भव्य जलूस निकाला गया जिसमें दीक्षार्थी ब्र. नरेन्द्र जैन को चार घोड़ों से बनी बग्गी में राजसी वेशभूषा में बैंड बाजों के साथ जगह-जगह तिलक करते हुए बहुत संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं के साथ जयजयकार करते हुए क्षेत्र के मूलनायक भगवान श्री शंभवनाथ के दर्शन करवाये गये फिर पाण्डाल में उपस्थित होकर दीक्षार्थी ने आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का दर्शन कर उन्हें

श्रीफल भेंट कर उनसे दीक्षा हेतु नम्र निवेदन किया। आचार्यश्री ने अपने प्रवचनों में दीक्षा का महत्त्व बतलाते हुए कहा कि जो संसार के मोह-जाल को छोड़कर मोक्ष प्राप्ति हेतु आध्यात्मिक साधना की जाती है और समता व आनन्द पूर्वक जो शरीर को तपस्या की आग में तपाया जाता है उसका नाम दीक्षा कहलाता है तथा गुरुमुख से रक्षाबंधन पर्व की कथा सुनाई। दीक्षार्थी द्वारा केश लोंच भी किये गये और दीक्षार्थी को प्रदान किये जाने वाले कमण्डल शास्त्र आदि प्रदान करने हेतु पात्रों का चयन किया गया। साथ ही बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान श्रीफल शाल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर वर्षायोग कमेटी के अध्यक्ष अरविन्दभाई गांधी व प्रवीशभाई मेहता आदि द्वारा किया गया। दोपहर में सामायकि, ध्यान आदि के उपरान्त डेढ़ बजे से महिला वर्ग द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम का मुख्य दृश्य देखने को मिला जिसमें आचार्यश्री आर्जवसागरजी द्वारा दीक्षा के संस्कार मंत्रादिक पाठ से प्रारम्भ हुए साथ ही दीक्षार्थी ने रागयुक्त राजसी वेशभूषा का त्याग कर दिया। उन्हें पीछी कमण्डल और शास्त्र प्रदान किये गये। आचार्यश्री की पादपूजन की गई, दीक्षार्थी के जीवन पर उनके परिचित लोगों द्वारा प्रकाश डाला गया। दीक्षार्थी ने क्षमावाणी पूर्वक संसार त्याग का महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन दिया। दीक्षा के व्रत-संकल्प ग्रहण करने के उपरान्त दीक्षक का नाम ऐलक श्री 105 नभितसागरजी महाराज रखा गया।

कार्यक्रम में म.प्र. के भिण्ड, हरदानगरी, महाराष्ट्र के पूना कोल्हापुर एवं कर्नाटक, छत्तीसगढ़, महेसाणा, विसनगर आदि स्थानों से बहुत संख्या में लोग उपस्थित हुए थे। सभी ने श्रीफल भेंट अपने-अपने नगर में आचार्यश्री को ससंघ पधारने हेतु नम्र निवेदन किया। अंत में आचार्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। भव्य कार्यक्रम की पूर्णता पर क्षेत्र के मंत्री हसमुखभाई बी दोशी, स्नेहलभाई बी शाह, एवं हर्षदभाई मेहता ने आभार प्रस्तुत कर सभी को धन्यवाद अर्पित किया। कार्यक्रम सायं साढ़े पाँच बजे तक चला इस भव्य कार्यक्रम का संचालन पं. सुशील जैन वासवाड़ा ने किया।

प्रेषक-
मंत्री श्री हसमुखभाई दोशी
दि. जैन कोठी तारंगा जी

साइक्लिंग से होगा मधुमेह का खतरा दूर

एक अध्ययन में पता चला है कि पैदल चलने और साइकिल चलाने वालों को उच्च रक्तचाप, मोटापे और मधुमेह का खतरा कम रहता है। लंदन के इंपेरियल कॉलेज और पब्लिक हैल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया के शोधकर्ताओं ने लोगों को शारीरिक गतिविधि चालू रखने वाले वाहनों के प्रयोग करने के साथ-साथ अधिक से अधिक पैदल चलने की सलाह दी है। इससे कई तरह की बीमारियों का खतरा कम होता है।

साभार : पत्रिका, (दैनिक समाचार), 30/08/15, भोपाल

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।
   डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचन विला, कृष्ण विहार, वी.के. कोल नगर, (अजमेर राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

मार्च 2015

प्रथम श्रेणी

श्रीमती कमला जैन

शासकीय नर्सरी के पीछे, नूतन नगर, खरगोन (म.प्र.)

द्वितीय श्रेणी

श्रीमती विमला ठौरा

44, विमल निवास, कृष्णा कॉलोनी, रामगंजमंडी (कोटा)

तृतीय श्रेणी

मयंक जैन

71, नवरंग नगर, ब्यावर, राजस्थान 305901

उत्तर पुस्तिका - मार्च 2015

1. दशलाख पूर्व वर्ष, 2. पौष कृष्ण एकादशी,
3. मन:पर्ययज्ञान 4. श्रीदत्त 5. हाँ
6. ना, 7. हाँ 8. ना
9. चन्द्रपुर 10. नागवृक्ष 11. दो
12. सामान्य अरिहंत और तीर्थंकर अरिहंत में अनन्त चतुष्टयादि मुख्य गुणों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, लेकिन सामान्य अरिहन्तों के कल्याणक नहीं होते एवं समवशरण की रचना नहीं होती। और तीर्थंकर अरिहंत के विशिष्ट पुण्य रूप तीर्थंकर प्रकृति के कारण कल्याणक होते हैं एवं समवशरण की रचना होती है।
13. महासेन, 14. लक्ष्मणा, 15. विमला, 16. सोमदत्त, 17. सही
18. गलत, 19. सही, 20. सही।

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❖ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❖ उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखें। लिखकर काटे या मिटाए जाने पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

सही उत्तर पर (✓) सही का निशान लगावें-

प्र.1. श्री पुष्पदन्त भगवान कौन से स्वर्ग से अवतरित हुये थे ?

अच्युत स्वर्ग ( ) प्राणत स्वर्ग ( ) आणत स्वर्ग ( )

प्र.2. श्री पुष्पदन्त भगवान कहाँ पर जन्में थे ?

अयोध्या नगरी ( ) हस्तिनापुर ( ) काकंदीपुर ( )

प्र.3. श्री पुष्पदन्त भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

100 धनुष ( ) 125 धनुष ( ) 150 धनुष ( )

प्र.4. श्री पुष्पदन्त भगवान को वैराग्य का कारण क्या था ?

हिमनाश ( ) उल्कापात ( ) जातिस्मरण ( )

हाँ या ना में उत्तर दीजिये-

प्र.5. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के नब्बे करोड़ सागर का अन्तर बीत चुकने पर पुष्पदन्त भगवान हुए थे। ( )

प्र.6. तीर्थंकर क्या स्वयंभू होते हैं ? ( )

प्र.7. पुष्पदन्त भगवान ने पचास लाख पूर्व तक कुमार अवस्था के सुख प्राप्त किये थे। ( )

प्र.8. श्री पुष्पदन्त भगवान के समवशरण में प्रमुख गणधर अनगार थे। ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

प्र.9. श्री पुष्पदन्त भगवान की प्रथम आहारचर्या .... नगर में हुई थी।

(नलिन नगर, शौलपुर नगर, सोमखेट नगर)

प्र.10. श्री पुष्पदन्त भगवान के समवशरण का विस्तार .... था।

(8 योजन, 9 योजन, 7 योजन)

प्र.11. श्री पुष्पदन्त भगवान .... तिथि पर मोक्ष प्राप्त किया था।

(चैत्र शुक्ला एकादशी, भाद्र शुक्ला चतुर्दशी, भाद्र शुक्ला अष्टमी)

दो पंक्तियों में उत्तर दें:-

प्र.12. तीर्थंकर बनने वाला जीव जब माता के गर्भ में आने वाला होता है तब कितने महिने पहले से ही माता के आंगन में प्रतिदिन कितने बार कितने-कितने रत्नों की वर्षा होती है ?

....

....

....

सही जोड़ी मिलायें:-

प्र.13. श्री पुष्पदन्त भगवान के समवसरण में कुल गणधारों की संख्या - पन्द्रह सौ

प्र.14. श्री पुष्पदन्त भगवान के समवसरण में श्रुतकेवलियों की संख्या - सात हजार

प्र.15. श्री पुष्पदन्त भगवान के समवसरण में केवलज्ञानियों की संख्या - तीन लाख अस्सी हजार

प्र.16. श्री पुष्पदन्त भगवान के समवसरण में आर्यिकाओं की संख्या - अट्ठासी

सही (✓) या गलत (×) का चिन्ह बनाइये:-

प्र.17. श्री पुष्पदन्त भगवान इक्ष्वाकुवंशी थे। ( )

प्र.18. तीर्थंकर के समवसरण में 12 सभायें होती हैं। ( )

प्र.19. तीर्थंकर आर्य देश में ही विहार करते हैं। ( )

प्र.20. श्री पुष्पदन्त भगवान सम्मेदशिखर के मित्रधर कूट से मोक्ष गये। ( )

आधार

1. उत्तर पुराण, 2. जैनागम संस्कार

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता...

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ **शिरोमणी संरक्षक** ✳✳✳✳✳

● मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

परम संरक्षक : ● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ **पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक** ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी** : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

✳✳ **पुण्यार्जक संरक्षक** ✳✳

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ **सम्मानीय संरक्षक** ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर :** श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन, ● **सूरत :** श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेश भाई शाह।

✳ **संरक्षक** ✳

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● दिल्ली : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी ● श्रीमति विमला मनोहर जैन, सूरत ● **जयपुर** : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर** : श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● इंदौर : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर

✳ **विशेष सदस्य** ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● सूरत : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह-मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी, हरदा : श्री जैन नीलेश अजमेरा, अहमदाबादः श्री जैन रमेशभाई जोइतालाल मेहता

नोट : हमारी भाव विज्ञान पत्रिका में विशेष सदस्यों तक आजीवन सदस्यों की सूची हमेशा प्रकाशित की जाती है, और विषय वस्तु से अतिरिक्त स्थान उपलब्ध होने पर नए तथा संपूर्ण सदस्यों की सूची भी प्रकाशित की जाती है।

✳ **नवागत सदस्य** ✳

कोलकाताः श्री जैन भोगीलाल जी दोषी, **मुम्बई :** श्री जैन संजय मेहता, श्री जैन जिग्नेशभाई एच. मेहता, **विसनगरः** श्री जैन हसमुख भाई वी. दोशी, **महेसाणाः** श्री जैन प्रवीनभाई जी. मेहता, **अहमदाबादः** श्री जैन स्नेहलभाई बी. शाह, श्री जैन पिनेशभाई एम. मेहता

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....

जिला .... प्रदेश ....से

भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/- ☐ पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/-☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा वर्तमान व्यवहारिक का पता :- ....

....

जिला .... प्रदेश ....

पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर .... मोबाईल ....

ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

आशीर्वाद एवं प्रेरणा : संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण

☛ सत् साहित्य समीक्षा। ☛ अहिंसात्मक जीवन शैली। ☛ व्यसन मुक्ति अभियान।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या किसी दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

कृपया यहाँ से निकालें

कमेटी द्वारा सम्मान पाते हुए षोडसकरण पर्व
के पुण्यार्जक सुरेश भाई गांधी सपरिवार, सूरत।

इंदौर नगरी के पत्रकार श्री भानुकुमार जैन तारंगा
क्षेत्र पर सम्मान पाते हुए।

श्री लोकेश जैन दिल्ली वर्षायोग स्थापना पर
तारंगा क्षेत्र पर सम्मान प्राप्त करते हुए।

श्री विनोद कुमार जैन, अजमेर वर्षायोग स्थापना
व दीक्षा समारोह पर तारंगाजी में सम्मानित होते हुए।

श्री सी कुमार जैन, तमिलनाडु वर्षायोग स्थापना पर
कमेटी द्वारा सम्मानित होते हुए।

श्री पवन कुमार जैन 'पारस प्रिंटर्स' भोपाल कमेटी
द्वारा तारंगा जी में सम्मानित होते हुए।

वीड नगर (खण्डवा) से पधारे अतिथिगण
वर्षायोग स्थापना पर तारंगा जी में सम्मानित होते हुए

तारंगाजी में 2015 के वर्षायाग की स्थापना एवं दीक्षा
समारोह का अवलोकन करता हुआ जनसमूह।

क्षुल्लक दीक्षा के उपरान्त नवीन पिच्छिका ग्रहण करते हुए श्री 105 भाग्यसागरजी।

दीक्षित महाराज हेतु कमण्डल अर्पित करते हुए कर्नाटक व महाराष्ट्र के श्रावकगण।

दीक्षित महाराज हेतु कमण्डल अर्पित करते हुए गुजरात के भक्तगण।

गुरुवर के कर कमलों से क्षुल्लकश्री भाग्यसागरजी कमण्डल ग्रहण करते हुए।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी के कर कमलों में शास्त्र भेंट करते हुए दीक्षक के परिजन।

पं. चन्द्रप्रकाश 'चन्दर' ग्वालियर का सम्मान करते हुए अरविंद भाई गांधी, सूरत।

अंकुर जैन, सूरत का सम्मान करते हुए हसमुख भाई गांधी, विसनगर।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी के लिए शास्त्र दान करते हुए।

ऐलक पद की दीक्षा के संस्कार प्रदान करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

ऐलक क्षुल्लक अवस्था में खण्ड वस्त्र धारण करते हुए दीक्षार्थी।

क्षुल्लक दीक्षा के संस्कार देते हुए धर्मप्रभावक अध्यात्मयोगी गुरुवर आचार्यश्री।

दीक्षा की क्रियाओं का अवलोकन करते हुए भक्तगण तारंगाजी के विशाल पण्डाल में।

दीक्षार्क्षियों पर दीक्षा के महान मंत्रों की विधि करते हुए आचार्यश्री।

गुरुवर के करकमलों में दीक्षा प्रदान करने हेतु पिच्छिका अर्पित करते हुए भक्तगण।

दीक्षा हेतु राग युक्त वेश-भूषा का त्याग करते हुए दीक्षार्थी।

ऐलक दीक्षा के उपरान्त नवीन पिच्छिका ग्रहण करते हुए श्री 105 महानसागरजी।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण करते हुए तारंगा क्षेत्र के पदाधिकारीगण।

दीक्षा प्राप्ति हेतु वैराग्य भाव सह पाण्डाल में उपस्थित होते हुए ब्र. महावीर व ब्र. भूपेन्द्र भैया।

वर्षायोग स्थापन एवं दीक्षा के कार्यक्रम पर दीप प्रज्ज्वलन करते हुए डॉ. सुधीर जैन आदि।

दीक्षा पूर्व आचार्यश्री आर्जवसागरजी के चरणों में श्रीफल अर्पित करते हुए ब्र. महावीर भैया, कर्नाटक।

दीप प्रज्ज्वलन में भाग लेते हुए तमिलनाडु से पधारे भक्तगण, विद्वत्गण।

दीक्षा पूर्व आचार्यश्री आर्जवसागरजी से दीक्षा का निवेदन करते हुए ब्र. भूपेन्द्र भैया, सूरत।

दीक्षा के पूर्व शोभायात्रा के समय प्रभावना रथ में बैठ कर सम्मानित होते हुए दीक्षार्थी द्वय।

क्षमा याचना के साथ सभा में गुरुवर से दीक्षा का निवेदन करते हुए ब्र. महावीर भैया।

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज भक्तों
के लिए आशीर्वाद देते हुए।

सिद्धक्षेत्र तारंगाजी में भव्य मंगल प्रवेश पर आचार्यश्री
के साथ चलते हुए भक्तगण

सिद्धक्षेत्र तारंगाजी में भव्य मंगल प्रवेश के दौरान
अर्घ अर्पण करते हुए पदाधिकारीगण।

सिद्धक्षेत्र तारंगाजी में जिन मंदिरों का दर्शन करते हुए
आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

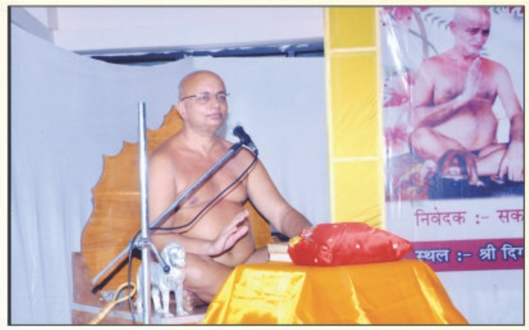

मंगल प्रवेश पर भक्तों के लिए आचार्यश्री आर्जवसागरजी
महाराज प्रथम आशीष देते हुए।

वर्षायोग हेतु एवं अषाढ़ माह की आष्टाह्निक पर्व में
सिद्धचक्र विधान हेतु निवेदन करते हुए पदाधिकारीगण।

तारंगाजी क्षेत्र पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी
की नवधा भक्ति करते हुए भक्तगण।

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज से तारंगा क्षेत्र कमेटी के सदस्यगण वर्षायोग हेतु निवेदन करते।

प्रवचन का मंगलाचरण करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

आचार्यश्री के प्रवचन पूर्व मंगलाचरण करती हुईं संघस्थ व्रती बहिनें।

वर्षायोग के मंगल कलश स्थापन पर पधारते हुए आचार्यश्री ससंघ।

वर्षायोग की स्थापना सम्बन्धी भक्तिपाठ करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ।

वर्षायोग के मंगल कलश की स्थापना पर कलश सिर पर लिये पुण्यार्जक भक्तगण।

आचार्यश्री के साथ मंगल करते हुए नव दीक्षित ऐलक महानसागरजी व क्षुल्लक भाग्यसागरजी।

वर्षायोग का प्रथम कलश स्थापित करते हुए पुण्यार्जक श्री हर्षद भाई मेहता, सूरत।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)